यूको काशी अमृत

वाराणसी अंचल कार्यालय की हिन्दी गृह पत्रिका

अप्रैल — सितम्बर 2025

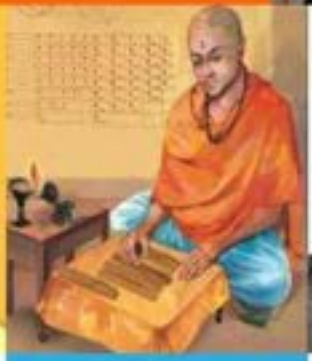

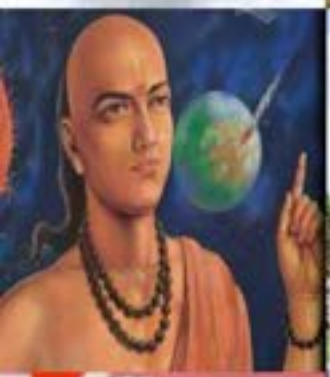

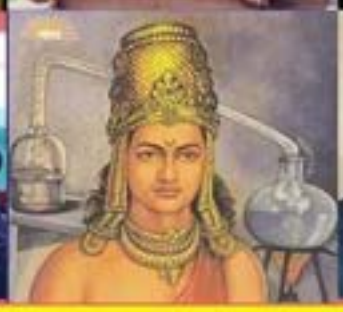

यूको बैंक UCO BANK

(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)

सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

कृष्ण की चेतावनी-संक्षिप्त

वर्षों तक वन में घूम-घूम, बाधा-विघ्नों को चूम-चूम,
सह धूप-घाम, पानी-पत्थर, पांडव आये कुछ और निखर।
सौभाग्य न सब दिन सोता है,देखें, आगे क्या होता है।
मैत्री की राह बताने को, सबको सुमार्ग पर लाने को,
दुर्योधन को समझाने को, भीषण विध्वंस बचाने को,
भगवान् हस्तिनापुर आये,पांडव का संदेशा लाये।

'दो न्याय अगर तो आधा दो, पर, इसमें भी यदि बाधा हो,
तो दे दो केवल पाँच ग्राम, रखो अपनी धरती तमाम।
हम वहीं खुशी से खायेंगे,परिजन पर असि न उठायेंगे!
दुर्योधन वह भी दे ना सका, आशीष समाज की ले न सका,
उलटे हरि को बाँधने चला, जो था असाध्य साधने चला।
जब नाश मनुज पर छाता है,पहले विवेक मर जाता है।

हरि ने भीषण हुंकार किया, अपना स्वरूप-विस्तार किया,
डगमग-डगमग दिग्गज डोले, भगवान् कुपित होकर बोले-
'जंजीर बढ़ा कर साध मुझे,हाँ, हाँ दुर्योधन! बाँध मुझे।
यह देख, गगन मुझमें लय है, यह देख, पवन मुझमें लय है,
मुझमें विलीन झंकार सकल, मुझमें लय है संसार सकल।
अमरत्व फूलता है मुझमें,संहार झूलता है मुझमें।

बाँधने मुझे तो आया है, जंजीर बड़ी क्या लाया है?
यदि मुझे बाँधना चाहे मन, पहले तो बाँध अनन्त गगन।
सूने को साध न सकता है,वह मुझे बाँध कब सकता है?
हित-वचन नहीं तूने माना, मैत्री का मूल्य न पहचाना,
तो ले, मैं भी अब जाता हूँ, अन्तिम संकल्प सुनाता हूँ।
याचना नहीं, अब रण होगा,जीवन-जय या कि मरण होगा।

टकरायेंगे नक्षत्र-निकर, बरसेगी भू पर वह्नि प्रखर,
फण शेषनाग का डोलेगा, विकराल काल मुँह खोलेगा।
दुर्योधन! रण ऐसा होगा।फिर कभी नहीं जैसा होगा।
भाई पर भाई टूटेंगे, विष-बाण बूँद-से छूटेंगे,
वायस-श्रृगाल सुख लूटेंगे, सौभाग्य मनुज के फूटेंगे।
आखिर तू भूशायी होगा,हिंसा का पर, दायी होगा।'

थी सभा सन्न, सब लोग डरे, चुप थे या थे बेहोश पड़े।
केवल दो नर ना अघाते थे, धृतराष्ट्र-विदुर सुख पाते थे।
कर जोड़ खड़े प्रमुदित, निर्भय,दोनों पुकारते थे 'जय-जय'।

संक्षिप्त परिचय-रामधारी सिंह दिनकर

रामधारी सिंह 'दिनकर' हिन्दी के एक प्रमुख लेखक, कवि व निबन्धकार थे। 'दिनकर' स्वतन्त्रता पूर्व एक विद्रोही कवि के रूप में स्थापित हुए और स्वतन्त्रता के बाद 'राष्ट्रकवि' के नाम से जाने गये। वे छायावादोत्तर कवियों की पहली पीढ़ी के कवि थे। एक ओर उनकी कविताओं में ओज, विद्रोह, आक्रोश और क्रान्ति की पुकार है तो दूसरी ओर कोमल शृंगारिक भावनाओं की अभिव्यक्ति है। इन्हीं दो प्रवृत्तियों का चरम उत्कर्ष हमें उनकी कुरुक्षेत्र और उर्वशी नामक कृतियों में मिलता है।

'दिनकर' जी का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गाँव में भूमिहार ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास राजनीति विज्ञान में बीए किया। उन्होंने संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी और उर्दू का गहन अध्ययन किया था। बी. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद वे एक विद्यालय में अध्यापक हो गये। 1934 से 1947 तक बिहार सरकार की सेवा में सब-रजिस्टार और प्रचार विभाग के उपनिदेशक पदों पर कार्य किया। 1950 से 1952 तक लंगट सिंह कालेज मुजफ्फरपुर में हिन्दी के विभागाध्यक्ष रहे, भागलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति के पद पर 1963 से 1965 के बीच कार्य किया और उसके बाद भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार बने।

उन्हें पद्म विभूषण की उपाधि से भी अलंकृत किया गया। उनकी पुस्तक संस्कृति के चार अध्याय के लिये साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा उर्वशी के लिये भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्रदान किया गया। अपनी लेखनी के माध्यम से वह सदा अमर रहेंगे।

द्वापर युग की ऐतिहासिक घटना महाभारत पर आधारित उनके प्रबन्ध काव्य कुरुक्षेत्र को विश्व के 100 सर्वश्रेष्ठ काव्यों में 74वाँ स्थान दिया गया।

निधन: 24 अप्रैल 1974

यूको काशी अमृत

संपादक मण्डल

संरक्षक
श्री मयंक सिंह
उप महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख

मार्गदर्शन
श्री अशोक कुमार गुप्ता
उप अंचल प्रमुख

प्रेरणा
श्रीमती संगीत कुमारी
सहायक महाप्रबंधक

श्री नवनीत जी पराते
सहायक महाप्रबंधक

विशेष सहयोग
श्री संसार भूषण अग्रवाल
मुख्य प्रबंधक

श्रीमती रश्मि माथुर
मुख्य प्रबंधक

श्री दिलीप कुमार
मुख्य प्रबंधक

श्री चेतन कुमार शर्मा
मुख्य प्रबंधक

संपादक
श्री अभिषेक शर्मा
प्रबंधक(राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विवरण	पृष्ठ संख्या
1	अंचल प्रमुख का संदेश	1
2	उप-अंचल प्रमुख का संदेश	2
3	संपादकीय	3
4	भारत के महान वैज्ञानिक-सी के शर्मा	4
5	भारत के विख्यात कवि- आशुतोष प्रताप सिंह	7
6	साइबर धोखाधड़ी- अखिल दुबे	16
7	मार्कण्डेय महादेव-सत्यानंद महेश्वरी	22
8	देव दीपावली-रवि प्रताप सिंह	25
9	कहानी -इंद्रदेव कुमार	28
10	कहानी -मकरध्वज त्रिपाठी	29
11	सीख-हर्ष कुमार ओझा	30
12	कहानी -दिनेश कुमार यादव	31
13	कहानी -राहुल कुमार सिंह	33
14	कहानी -रचना कुमारी चौहान	34
15	कहानी -शिप्रा प्रसाद	35
16	कविता-अजिता गुप्ता एवं आर्यन राज	38
17	बाल कलाकार-शानवी समृद्धि ,रुद्रांश सिंह	39
18	बाल कलाकार- माहिम एवं शैव्य अवस्थी	40
19	गतिविधियाँ	41
20	गतिविधियाँ	42
21	गतिविधियाँ	43

अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय सहकर्मियों,
नमस्कार,

यूको काशी अमृत के इस अंक के माध्यम से आप सभी से संवाद करना मेरे लिए अत्यंत हर्ष और गौरव का विषय है। यह पत्रिका न केवल हमारे कार्यों की झलक प्रस्तुत करती है, बल्कि यूको परिवार की एकजुटता, नवाचार और समर्पण की कहानी भी कहती है।

आज का बैंकिंग परिदृश्य तेजी से बदल रहा है — तकनीकी विकास, प्रतिस्पर्धा और ग्राहकों की अपेक्षाएँ हमें निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा दे रही हैं। ऐसे समय में हमारा संकल्प स्पष्ट है: ग्राहकों को भरोसेमंद, सरल और आधुनिक सेवाएँ प्रदान करना, ताकि वे यूको बैंक को केवल एक बैंक नहीं, बल्कि अपने विश्वास का साथी समझें।

हमारी रणनीति व्यवसाय विस्तार, सेवा गुणवत्ता में सुधार और डिजिटल नवाचार को केंद्र में रखकर आगे बढ़ रही है। खुदरा ऋण, एमएसएमई, कृषि और डिजिटल बैंकिंग जैसे क्षेत्रों में हमारी सक्रियता ही हमारे भविष्य की नींव है। प्रत्येक कर्मचारी की भूमिका इस यात्रा में अत्यंत महत्वपूर्ण है — उनका समर्पण ही हमारे विकास का मूल है।

डिजिटल उत्पादों जैसे यूको एम-बैंकिंग ऐप, यूको पे, इंटरनेट बैंकिंग, यूपीआई और ई-लॉबी सेवाओं के माध्यम से हम ग्राहकों को सुविधा, सुरक्षा और गति प्रदान कर सकते हैं। इन सेवाओं के प्रति जागरूकता और प्रोत्साहन ही हमारे कारोबार को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगा।

साथ ही, राजभाषा हिंदी का प्रयोग हमारे संवाद को अधिक आत्मीय और प्रभावशाली बनाता है। जब हम अपनी भाषा में बात करते हैं, तो न केवल ग्राहकों से जुड़ाव बढ़ता है, बल्कि कार्य में सहजता और अपनापन भी आता है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि यूको परिवार का हर सदस्य अपने कर्म, निष्ठा और सकारात्मक सोच से बैंक को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में अग्रणी भूमिका निभाएगा। आइए, हम सब मिलकर प्रण ले की प्रधान कार्यालय द्वारा समय-समय पर दिए जाने वाले लक्ष्यों को जरूर प्राप्त करेंगे।

धन्यवाद।

शुभकामनाओं सहित

मयंक सिंह

उप अंचल प्रमुख का संदेश

प्रिय सहकर्मियों,
नमस्कार,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि वाराणसी अंचल की गृह पत्रिका "यूको काशी अमृत" निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। यह पत्रिका केवल सूचना और रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि हमारे विचारों, उपलब्धियों और अनुभवों को साझा करने का एक सशक्त मंच है — जो अंचल की ऊर्जा, प्रतिबद्धता और नवाचार का जीवंत प्रतिबिंब प्रस्तुत करती है।
वित्तीय वर्ष 2025-26 की दो तिमाहियाँ पूर्ण हो चुकी हैं। इस अवधि में हमने कई नई चुनौतियों का सामना किया और अनेक उल्लेखनीय उपलब्धियाँ भी अर्जित कीं। अब समय है कि हम इन प्रयासों को और अधिक सुदृढ़ करें। निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु हमें टीम भावना, समर्पण और निरंतरता के साथ कार्य करना होगा। विशेष रूप से एनपीए नियंत्रण और वसूली के क्षेत्र में ठोस रणनीतियाँ अपनाते हुए यह सुनिश्चित करना होगा कि नए खाते डिफॉल्ट की श्रेणी में न आएँ।

बैंकिंग जगत में डिजिटल क्रांति निरंतर विस्तार पा रही है। ग्राहकों को उत्कृष्ट सेवा प्रदान करने के लिए हमें मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई, इंटरनेट बैंकिंग तथा डिजिटल ऋण प्लेटफॉर्म्स जैसे आधुनिक उत्पादों को बढ़ावा देना होगा। इन सेवाओं की सरलता, सुरक्षा और उपयोगिता से ग्राहकों को परिचित कराना हमारा दायित्व है। डिजिटल बैंकिंग को अपनाना आज की आवश्यकता ही नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा भी है।

राजभाषा हिंदी हमारी सांस्कृतिक पहचान और प्रशासनिक सुदृढ़ता का प्रतीक है। मैं आप सभी से आग्रह करता हूँ कि कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें और राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान दें।

अंत में, मैं आप सभी से अपेक्षा करता हूँ कि यूको काशी अमृत को और अधिक ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायक एवं रोचक बनाने में अपना रचनात्मक सहयोग प्रदान करें। आइए, हम सब मिलकर इस पत्रिका को वाराणसी अंचल की सशक्त आवाज़ और सकारात्मक सोच का प्रतीक बनाएं।

धन्यवाद।

शुभकामनाओं सहित

अशोक कुमार गुप्ता

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,
सादर प्रणाम

यह पत्रिका हमारे विभागीय कार्यों, भाषा-सामंजस्य और रचनात्मक गतिविधियों को एक मंच प्रदान करती है, साथ ही यूको परिवार के बीच पारस्परिक सहयोग एवं संवाद को भी मजबूत बनाती है।
राजभाषा हिंदी हमारे प्रशासनिक एवं ग्राहक-सेवा तंत्र का महत्वपूर्ण आधार है। हिंदी का प्रभावी उपयोग न केवल कार्य की सरलता बढ़ाता है, बल्कि ग्राहकों के साथ हमारा जुड़ाव भी सुदृढ़ करता है। जब हम अपनी भाषा में बात करते हैं—चाहे वह शाखा का काउंटर हो, ऋण संबंधी परामर्श हो या डिजिटल सेवाओं की जानकारी—तो हमारे संवाद में स्पष्टता और अपनापन स्वतः जुड़ जाता है।

हमारी शाखाओं एवं विभागों में राजभाषा संबंधी कार्यों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न पहलें सतत जारी हैं—

- कार्यालयी पत्राचार, नोटिंग-ड्राफ्टिंग एवं रिकार्ड संधारण में हिंदी का बढ़ता उपयोग
- राजभाषा निरीक्षण, त्रिमासिक प्रगति रिपोर्ट एवं अनुपालन
- हिंदी कार्यशालाओं, प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं मार्गदर्शन सत्रों का आयोजन
- हिन्दी पखवाड़ा, निबंध, आलेख, कविता, अनुवाद एवं क्विज़ प्रतियोगिताओं के माध्यम से रचनात्मकता को प्रोत्साहन
- ग्राहकों हेतु फॉर्म, बोर्ड, प्रदर्श, सूचना-पटों एवं डिजिटल संचार में हिंदी के प्रयोग का विस्तार

इन प्रयासों का उद्देश्य केवल लक्ष्यों की पूर्ति नहीं, बल्कि एक ऐसे कार्य-संस्कृति का निर्माण है जहाँ भाषा हमारी दक्षता, संवेदनशीलता और पहचान को मजबूत करती है।
मैं यूको परिवार के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने सदैव राजभाषा कार्यों में सहयोग, प्रतिबद्धता और उत्साह दिखाया है। आगे भी हम सब मिलकर यह सुनिश्चित करेंगे कि हिंदी का प्रयोग सहज, प्रभावी और स्वाभाविक रूप से बढ़ता रहे।
आइए, हम संकल्प लें कि राजभाषा के संवर्धन में अपनी व्यक्तिगत और सामूहिक भूमिका को और मजबूत करेंगे तथा बैंक द्वारा निर्धारित राजभाषा लक्ष्यों को पूर्ण करने में अग्रणी रहेंगे।

आप सभी को "यूको काशी अमृत" के इस अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

धन्यवाद।

भारत के महान वैज्ञानिक : वेदों से लेकर आधुनिक युग तक

चेतन कुमार शर्मा

मुख्य प्रबंधक,खुदरा ऋण विभाग

भारत वह भूमि है जहाँ विज्ञान केवल प्रयोगशाला में नहीं, बल्कि जीवनशैली में रचा-बसा है। हमारे वेद, उपनिषद और आयुर्वेद केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं बल्कि वैज्ञानिक ज्ञानकोश हैं। शून्य, दशमलव, ग्रहों की गति, चिकित्सा, धातु विज्ञान, खगोल शास्त्र — इन सबका आरंभ भारत में हजारों वर्ष पहले हुआ था।

आज का भारत चंद्रयान और गगनयान जैसी तकनीकों से दुनिया को चौंका रहा है, पर इसकी नींव उन ऋषि-मुनियों ने रखी जिन्होंने प्रयोग को साधना माना।

वेदकालीन विज्ञान : जब ऋषि ही वैज्ञानिक थे

वेदों में विज्ञान की जड़ें

ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद में भौतिकी, रसायन, खगोल, गणित और चिकित्सा के सूत्र मौजूद हैं।

ऋग्वेद में जल-चक्र, ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति का उल्लेख है।

अथर्ववेद में औषधियों, जड़ी-बूटियों और रोग-निदान की विस्तृत चर्चा मिलती है।

सामवेद में ध्वनि और लय के वैज्ञानिक आधार निहित हैं — यही संगीत के विज्ञान की नींव है।

यजुर्वेद में पर्यावरण शुद्धि के सिद्धांत पर आधारित ,जहां यज्ञ और हवन से पर्यावरण को शुद्ध करने की बात कही गई है।

"यथा सूक्ष्मं तथा स्थूलं" — यह वैदिक सिद्धांत आज के माइक्रो और मैक्रो स्तर पर पदार्थ अध्ययन के समान है।

आयुर्वेदाचार्य : चिकित्सा विज्ञान के पुरोधा

चरक ऋषि:

चरक आयुर्वेद के महान वैद्य थे।
उनका ग्रंथ 'चरक संहिता' विश्व की पहली चिकित्सा प्रणाली का विस्तृत दस्तावेज है।
उन्होंने शरीर को त्रिदोष सिद्धांत (वात, पित्त, कफ) पर आधारित बताया। उनके योगदान में रोगनाशक और रोगनिरोधक दवाओं का उल्लेख
चरक ने कहा —"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।" अर्थात् मनुष्य के रोग और मुक्ति दोनों का मूल उसका मन ही है — यह आज के मनोविज्ञान की नींव जैसा विचार है।

सुश्रुत ऋषि:

सुश्रुत को "शल्य चिकित्सा के जनक" कहा जाता है। उनका ग्रंथ 'सुश्रुत संहिता' आज भी सर्जरी का आदर्श ग्रंथ है।
उन्होंने 300 से अधिक शल्य क्रियाओं और 120 शल्य उपकरणों का वर्णन किया।
उन्होंने ही सबसे पहले प्लास्टिक सर्जरी और नेत्र शल्य का वर्णन किया था।

"सर्जरी का पिता" कहे जाने वाले सुश्रुत को आज भी विश्व चिकित्सा जगत श्रद्धा से याद करता है।

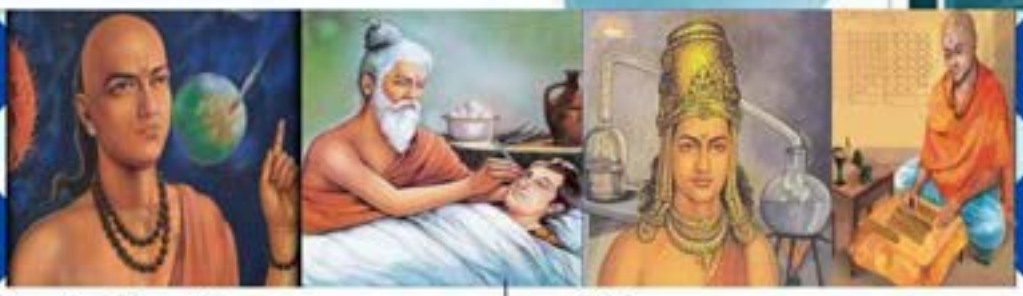

गणित और खगोल के महर्षि

आर्यभट्ट:

आर्यभट्ट ने विश्व को शून्य (0) और दशमलव प्रणाली का ज्ञान दिया।

उन्होंने बताया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, और ग्रहों की गति सूर्य के चारों ओर है।

उनकी रचना 'आर्यभटीय' गणित और खगोल दोनों की अमर पुस्तक है।

उन्होंने ही लिखा — "दिन-रात का कारण पृथ्वी का घूर्णन है।" जब विश्व इस सत्य से अनभिज्ञ था।

ब्रह्मगुप्त :

ब्रह्मगुप्त ने गणित को बीजगणितीय रूप दिया। उनका ग्रंथ 'ब्रह्मस्फुट सिद्धांत' आज भी गणित के इतिहास में मील का पत्थर है।

उन्होंने ऋण और धन संख्याओं की अवधारणा दी।

भास्कराचार्य:

भास्कराचार्य ने 'लीलावती' और 'सिद्धांत शिरोमणि' जैसे ग्रंथ लिखे।

उन्होंने ग्रहों की गति, समय की गणना और गुरुत्व बल का उल्लेख न्यूटन से बहुत पहले किया।

उनकी पंक्ति थी:

"गुरुत्वात् पतति वस्तु।" — अर्थात् वस्तु गुरुत्व के कारण गिरती है।

वराहमिहिर :

उन्होंने 'बृहत्संहिता' में खगोल, वास्तु, रत्न, ज्योतिष, मौसम और वनस्पति विज्ञान का समन्वय किया।

उनका जलवायु पूर्वानुमान पद्धति आज के मौसम विज्ञान की पूर्वज कही जा सकती है।

रसायन और धातु विज्ञान के आचार्य

नागार्जुन:

नागार्जुन को "भारतीय रसायन शास्त्र का जनक" कहा जाता है। उन्होंने धातु परिवर्तन, औषध रसायन और अल्केमी पर काम किया।

उनके ग्रंथ 'रसार्णव' में धातुओं से औषधि तैयार करने की तकनीक वर्णित है।

वे प्रयोगशाला में काम करने वाले पहले ज्ञात भारतीय रसायनज्ञ थे।

धन्वंतरि:

धन्वंतरि को आयुर्वेद का देवता माना जाता है। उन्होंने शरीर रचना और रोग निदान की वैज्ञानिक पद्धतियाँ दीं। आज भी धन्वंतरि जयंती पर चिकित्सा क्षेत्र में श्रद्धा के साथ उनका स्मरण किया जाता है।

आधुनिक भारत के वैज्ञानिक : प्रयोगशाला से अंतरिक्ष तक

जगदीश चंद्र बसु:

बोस ने साबित किया कि पौधों में भी जीवन और संवेदना

होती है। उन्होंने वायरलेस संचार की खोज भी सबसे पहले की।

सी. वी. रमन:
भारत के पहले भौतिकी नोबेल पुरस्कार विजेता।
उनकी खोज "रमन प्रभाव" ने प्रकाश के प्रकीर्णन की नई समझ दी।

होमी जे. भाभा :
भारत के परमाणु कार्यक्रम के जनक। उन्होंने भाभा एटॉमिक रिसर्च सेंटर की स्थापना की।
उनका सपना था — "विज्ञान को राष्ट्रनिर्माण का आधार बनाना।"

विक्रम साराभाई:
भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के संस्थापक।
उन्होंने भारत को अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में विश्व पटल पर लाकर खड़ा किया।
उनकी प्रेरणा से ही चंद्रयान और गगनयान जैसे मिशन संभव हुए।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम:
भारत के मिसाइल मैन, जिन्होंने रक्षा अनुसंधान को नई ऊँचाइयाँ दीं।
अग्नि, पृथ्वी मिसाइल परियोजनाएँ और पोखरण-II परमाणु परीक्षण उनके नेतृत्व में हुए।
उनका जीवन संदेश था —

"सपने वो नहीं जो नींद में आएँ, सपने वो हैं जो हमें नींद न आने दें।"

डॉ. सी. आर. राव:
विश्व प्रसिद्ध सांख्यिकीविद्, जिन्होंने गणित और डेटा साइंस को भारतीय पहचान दी।
उन्होंने "कैमर-राव सीमा" जैसी अवधारणा दी, जो आज भी सांख्यिकी का आधार है।

21वीं सदी के नए वैज्ञानिक क्षितिज:
भारत के युवा वैज्ञानिक अब क्वांटम कंप्यूटिंग, जेनेटिक इंजीनियरिंग, एआई, स्पेस टेक्नोलॉजी और सस्टेनेबल एनर्जी पर काम कर रहे हैं।
इसरो के वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-3 की सफलता से विश्व को बताया कि भारत सीमित संसाधनों में भी असीमित ऊँचाइयाँ छू सकता है।

वेदों से प्रयोगशाला तक : भारतीय विज्ञान की आत्मा

भारत में विज्ञान कभी धर्म का विरोधी नहीं रहा, बल्कि उसका पूरक रहा है।
यहाँ प्रयोगशाला और प्रार्थना दोनों में एक ही भावना रही **"सत्य की खोज"।**

ऋषि से लेकर रमन तक, चरक से लेकर कलाम तक — हर भारतीय वैज्ञानिक का एक ही लक्ष्य रहा : मानवता के कल्याण के लिए ज्ञान की ज्योति जलाना।
भारत का वैज्ञानिक इतिहास केवल उपलब्धियों की सूची नहीं, बल्कि मानव आत्मा की जिज्ञासा की कहानी है।
जब वेदों में विज्ञान बोला, जब सुश्रुत ने पहली शल्यक्रिया की, जब आर्यभट्ट ने शून्य खोजा, और जब कलाम ने आकाश छुआ।
हर युग ने यह कहा : "ज्ञान ही सर्वोच्च पूजा है।"

भारत के विख्यात कवि और कवित्रियाँ: युगों की अमर स्वर-गाथा

आशुतोष प्रताप सिंह

सहायक प्रबन्धक,मुग़लसराय शाखा

भारत की आत्मा उसकी कविता में बसती है।
यह वह भूमि है जहाँ शब्द केवल उच्चरित नहीं होते, जीए जाते हैं।
सदियों से कवियों ने अपने शब्दों से जनमानस को दिशा, चेतना और संवेदना दी है।
कविता ने कभी ईश्वर को पुकारा, कभी समाज को झकझोरा, तो कभी प्रेम और प्रकृति के माध्यम से जीवन को अर्थ दिया।

तुलसीदास और कबीर से लेकर महादेवी वर्मा, हरिवंश राय बच्चन और गुलज़ार तक, यह यात्रा भारतीय काव्य की आत्मा का इतिहास है।

भक्ति युग – आत्मा की पुकार:

गोस्वामी तुलसीदास (1532–1623)
तुलसीदास जी ने "रामचरितमानस" जैसे महाकाव्य से भक्तिभाव को जन-जन तक पहुँचाया।
उनकी सफलता इस बात में है कि उन्होंने संस्कृत के ज्ञान को आम जन की भाषा अवधी में पिरो दिया।
उनके दोहे और चौपाइयाँ आज भी जीवन का मार्गदर्शन करती हैं।

"जो सुख राम चरन रज पाई।
सो सुख नहिं परलोकहुँ भाई॥"

तुलसीदास की कविता ने लोकभाषा को धर्म और दर्शन का माध्यम बनाया।

कबीरदास (1440–1518)
कबीर न केवल कवि थे, बल्कि एक समाज-सुधारक और संत भी थे। उन्होंने रूढ़ियों, जाति-भेद और अंधविश्वास पर चोट की। उनकी सफलता इस तथ्य में है कि उन्होंने सत्य को सहज शब्दों में कहा

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।"

कबीर की वाणी आज भी समरसता और मानवता का प्रतीक है।

सूरदास (1478–1583)
भक्तिकाल में सूरदास ने बालकृष्ण की लीलाओं को अपने पदों में जीवंत कर दिया।
उनकी कविता में भक्ति और वात्सल्य का अनुपम संगम दिखाई देता है।

"मैया! मोहिं दाऊ बहुत खिझायो।
मुँह लपटाइ माखन खायो॥"

सूरदास की कविता हृदय को रससिक्त कर देती है।

मीरा बाई (1498–1546)
मीरा बाई कृष्ण-भक्ति की अनुपम साधिका थीं। उन्होंने अपने गीतों में प्रेम, समर्पण और विरह की भावनाओं को अत्यंत मार्मिक रूप में अभिव्यक्त किया।

उनका कृष्ण-प्रेम लौकिक सीमाओं से परे आत्मिक ऊँचाइयों को छूता है।
उनकी वाणी में आत्मसमर्पण की मधुर ध्वनि सुनाई देती है-

"पायो जी मैंने राम रतन धन पायो
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।"

मीरा की भक्ति हृदय में करुणा, प्रेम और निष्कपटता का भाव भर देती है।

संत रविदास (1450–1520)
संत रविदास प्रेम, समानता और मानवीय मूल्यों के महान प्रवर्तक थे। उन्होंने जाति-भेद से ऊपर उठकर मानवता का संदेश दिया । उनकी वाणी सरल, सहज और गहन सत्य से ओतप्रोत है।
उनका भक्तिपथ समाज को समता और आध्यात्मिक उन्नति की ओर ले जाता है-

"मन चंगा तो कठौती में गंगा।
जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।"

रविदास की वाणी आज भी आत्मा को निर्मल और संतुलित कर देती है।

अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना (1556–1627) — रहीमदास
रहीमदास भक्ति, नीति और सूफ़ी भावनाओं का सुंदर मिश्रण हैं। उनकी दोहों में जीवन-व्यवहार की सूझ-बूझ, विनम्रता और मानवतावाद दिखाई देता है।
उनके शब्दों में लोकमंगल का अद्भुत संदेश है -

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गए न उबरे, मोती, मानुष, चून॥"

रहीम के दोहे जीवन को सरल, संतुलित और सद्भाव से भरने की प्रेरणा देते हैं।

रसखान (1558–1628)
रसखान कृष्ण-भक्ति के सूफी भक्त थे, जिन्होंने प्रेम और सौंदर्य के माधुर्य को अपनी कविता में अनोखे ढंग से पिरोया। उन्होंने वृंदावन, गोकुल और नंदलाल की बाल-लीलाओं का मोहक चित्रण किया।
उनका कृष्ण-प्रेम अलौकिक और जीवनदायी है—

"मानुष हौं तो वही रसखान,
बसौं मिलि गोकुल गाँव के ग्वालन।"

रसखान की रचनाएँ कृष्ण-प्रेम की मधुरता से हृदय को सराबोर कर देती हैं।

सहजोबाई (1725–1805)
सहजोबाई संत-परंपरा की प्रमुख साधिका थीं। उनकी वाणी में भक्ति, सहजता और गुरु-समर्पण का अद्भुत प्रकाश है। वे प्रेममार्ग की साधिका थीं, जो आत्मा की पवित्रता को सर्वोपरि मानती थीं।
उनकी वाणी सीधी, सरल, हृदय से निकली और आत्मा को छूने वाली है
"सहज मिले सोई राम, और न दूजी बात।
सहजो यहूँ न मानिए, मन ही मन की जात॥"
सहजोबाई की भक्ति साधना अंतर्मन को शांति और स्थिरता से भर देती है।

रीतिकाल – सौंदर्य और श्रृंगार का युग

रीतिकाल वह समय था जब कवियों ने प्रेम, नारी-सौंदर्य, नायक-नायिका और अलंकारों पर ध्यान केंद्रित किया।

बिहारीलाल (1595–1663)

बिहारी की "सतसई" (लगभग 700 दोहों का संग्रह) काव्य-कला का अनूठा उदाहरण है।

"नैनन हीं सौं पाई नैनन हीं सौं हार।
नैनन हीं सौं ब्याहरी, नैनन हीं सौं प्यार॥"

संक्षिप्त शब्दों में गहरी अनुभूति व्यक्त करने में बिहारी का कोई सानी नहीं।

केशवदास (1555–1617)

रीतिकाल के आचार्य कवि केशवदास ने अलंकार, श्रृंगार और काव्य-व्याकरण को ऐसी कलात्मकता से एक रूप दिया कि उनकी वाणी रीतिकाल का शिल्प-मानक बन गई।

उनकी कविता में रस, रीति और रूप-सौंदर्य का ऐसा सम्मिश्रण है जो मन को ललित माधुर्य से भर देता है-

"केसव बरवै रस-रंग, नयनन मोहन छवि छाय।
श्रृंगार-शोभा-रूप में, सब जग-जीवन लुटाय॥"

केशव की काव्य-सृष्टि चित्रों-सी सुंदर, ललित और अलंकारों से दीप्त दिखाई देती है।

भूषण (1613–1715)

यद्यपि भूषण वीर-रस के अद्वितीय गायक हैं, परंतु रीतिकाल की शैली-सौष्ठव,अलंकारिकता और छंद-वैभव उनके काव्य को अत्यंत समृद्ध बनाते हैं।

उनके काव्य में वीरता के साथ-साथ रेखांकन-सौंदर्य, उपमा की चमक और वर्णन-कौशल की अपूर्व छटा मिलती है-

"भूषण वाणी अलंकार की, दीप-लहरी सी झलकै।
शौर्य-रूप सौन्दर्य-छवि में, छंद-गगन सब थरथरकै॥"

भूषण रीतिकाल के कवित्व-वैभव का उज्ज्वल उदाहरण हैं।

घनानंद (1689–1760)

रीतिकाल के कोमल श्रृंगार और करुण रस के अनुपम कवि घनानंद ने प्रेम को कोमलता, वेदना और मधुरता की चरम अनुभूति दी।

उनकी प्रेयसी 'सुजान' के प्रति अनुराग, विरह और रागात्मक अनुभूति ने उनकी कविता को अद्वितीय बना दिया-

"घनानंद सुभग छवि-चाहत, नैनन कोमल नीर।
सुजान-बिरह की तनिक हवा, मन में भर दे वीर॥"

उनकी कविता नाजुक, नर्म, संगीत जैसी लय और सौंदर्य-लालित्य से भरी हुई है—यह रीतिकाल के श्रंगार का शिखर है।

चिंतामणि (18वीं सदी)

कवि चिंतामणि रीतिकाल के कलात्मक श्रृंगार, अलंकारिकता और सौन्दर्य-प्रधान प्रवाह के ऐसे कवि थे

जिनकी वाणी में रस, रीति और रूप का मधुर सामंजस्य मिलता है।
उनके पदों में कोमलता, नारी-छवि, सौंदर्य-वर्णन और भाव-लालित्य स्वाभाविक रूप से उभरता है-

"चिंतामणि के छंद में, रसानंद-सुहावन रंग।
नख-शिख वर्णन-रूप की, मन मोहै मधुर तरंग॥"

उनकी वाणी रीतिकालीन श्रृंगार-सौंदर्य की ललित परंपरा को सुशोभित करती है।

आधुनिक युग का आरंभ – जागृति और राष्ट्रभावना

मैथिलीशरण गुप्त (1886–1964)
मैथिलीशरण गुप्त आधुनिक हिंदी कविता के ऐसे युग-निर्माता कवि हैं, जिन्होंने खड़ी बोली को काव्य की गरिमा और प्रतिष्ठा प्रदान की। उनकी कविता में देशभक्ति, चरित्र निर्माण, मानवता, नारी-वंदना और भारतीय संस्कृति का उज्ज्वल स्वर मिलता है।

गुप्त की भाषा सहज, सरल और ओजस्वी है-
भावों में गहराई, चरित्रों में नैतिकता और काव्य में गंभीरता का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है।

उनकी सुप्रसिद्ध पंक्ति भारतीय संस्कृति की आत्मा बन चुकी है।

"नर हो, न निराश करो मन को।
कुछ काम करो, कुछ काम करो।"

जयशंकर प्रसाद (1889–1937)
छायावाद के जनक जयशंकर प्रसाद न केवल कवि थे बल्कि नाटक, कहानी और उपन्यास के भी शिल्पी थे। उनकी कविता में रहस्य, सौन्दर्य, गूढ़ संवेदना और मानवता की आंतरिक पुकार का अद्भुत संगम मिलता है। उनका काव्य मन को स्वप्निल उदात्तता से भर देता है-

"अरुण यह मधुमय देश हमारा,
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।"

प्रसाद की वाणी भारतीय संस्कृति, प्रकृति और आत्मिक सौंदर्य का महाकाव्यात्मक स्वर है।

सुमित्रानंदन पंत (1900–1977)
पंत प्रकृति के सौन्दर्य के कवि हैं—सुगंध, रंग, हवा, पर्वत, फूल, सब उनकी कविता में जीवंत हो उठते हैं।
उनके काव्य में प्रकृति-लालित्य, कोमलता और सौंदर्य की स्वर्गीय छटा है-

"उड़ गया अचानक लो भूधर,
फड़का यापार पारद के पर।
रव शेष रह गए हैं निर्झर,
है टूट पड़ा भू पर अम्बर। "

पंत की कविता मन को सुकोमल, निर्मल और सौंदर्य-रस से स्निग्ध बना देती है।

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (1896–1961)
निराला छायावाद की विद्रोही चेतना, करुणा और स्वाधीन सृजन-शक्ति के आधारस्तंभ हैं।

उनकी कविता दर्द और दृढ़ता, सौन्दर्य और संघर्ष, करुणा और क्रांति सबको साथ लेकर चलती है-

"वह तोड़ती पत्थर,
देखा मैंने इलाहाबाद के पथ पर।"

निराला की लेखनी युग-संवेदना, मानवीय वेदना और परिवर्तन की ज्योति से भरी है।

महादेवी वर्मा (1907–1987)

महादेवी वर्मा छायावाद की "मीरा" कही जाती हैं।
उनकी कविता विरह, माधुर्य, वेदना, करुणा और आत्मिक सौन्दर्य की दिव्य परंपरा है।
उनका काव्य मन में एक मधुर पीड़ा और स्नेह की शीतल धारा बहा देता है-

"नीर भरी दुख की बदली,
मैं लघु-सी व्याकुल छाया।"

महादेवी हिंदी कविता की सबसे कोमल और आध्यात्मिक आवाज़ हैं।

सुभद्रा कुमारी चौहान (1904–1948)

सुभद्रा कुमारी चौहान हिंदी साहित्य की ओजस्वी और संवेदनशील कवयित्री थीं।
उनकी वाणी में देशभक्ति, कोमल भावनाएँ, मातृभूमि के प्रति समर्पण और स्त्री-शक्ति का उज्ज्वल तेज दिखाई देता है।
उनकी कविता हृदय में उत्साह, करुणा,और सौंदर्य का प्रेरक स्पर्श छोड़ जाती है-

"स्वर्णिम स्मृतियों की धारा बनकर,
वीरता मन में जगमग होती है।
नारी-शौर्य की मधुर गाथा ही,
मेरी कविता में जी उठती है।"

उनकी लेखनी में सरलता, ओज और भावनात्मक गहनता का अद्भुत संगम मिलता है।
सुभद्रा जी की काव्य-धारा भारतीय स्वाधीनता, नारी-गरिमा और राष्ट्रीय चेतना का सशक्त, संगीतपूर्ण और प्रेरणादायी स्वर है।

माखनलाल चतुर्वेदी (1889–1968)

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय चेतना, स्वाधीनता, प्रकृति और कोमल भावनाओं के प्रेरक कवि हैं।
उनकी वाणी में मातृभूमि के प्रति समर्पण और सौन्दर्य का अद्भुत समन्वय मिलता है:

"मुझे तोड़ लेना वनमाली,
उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाएँ वीर अनेक।"

उनका काव्य भारतीय स्वप्न, स्वाधीनता और अस्मिता का उजला स्वर है।

रामकुमार वर्मा (1905–1990)

रामकुमार वर्मा छायावाद और राष्ट्रीय भावना के संवेदनशील कवि थे।
उनकी वाणी में करुणा, गीतिमयता, आत्म-पीड़ा और सौंदर्य की स्वर्णिम छटा दिखाई देती है।

उनका काव्य मानवीय संवेदना का कोमल स्पर्श देता है

"स्मृतियों की छाया में अक्सर,
मन-वन मधुर सुवासित होता।"

उनकी लेखनी में भाव-कोमलता और छायावादी संगीत का सुंदर अनुनाद मिलता है।

रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908–1974)
दिनकर हिंदी के ओज, सामर्थ्य और राष्ट्रीय चेतना के महाकवि थे।
उनकी वाणी में वीरता का तेज, अन्याय के विरुद्ध विद्रोह, और करुणा का मानवीय स्पर्श एक साथ दिखाई देता है।
उनका काव्य आत्मसम्मान, शक्ति और साहस की प्रेरणा देता है-

"जब नाश मनुष्य पर छाता है,
पहले विवेक मर जाता है।"

उनकी लेखनी में गर्जना, ऊर्जा और नैतिक उदात्तता का अद्वितीय अनुनाद मिलता है,
जो आज भी मन में आत्मबल और राष्ट्रभक्ति की ज्वाला प्रज्वलित कर देता है।

नागार्जुन (1911–1998)
नागार्जुन जनकवि थे धरती, किसान, गरीबी, संघर्ष और जनजीवन के सच्चे स्वर।
उनकी कविता में सामाजिक यथार्थ की तीखी सच्चाई और संवेदनाओं की सजीव धड़कन साथ-साथ चलती

उनकी भाषा सरल है, पर गहरा प्रभाव डालने वली थी-

"इतने दिन बाद
फिर आया है
गाँव का मेला।"

उनकी लेखनी जन-मन, जन-पीड़ा और जन-स्वर की प्रतिध्वनि है,
जो जीवन की मिट्टी से उठकर पूरे समाज की अंतरात्मा को छू जाती है।

केदारनाथ अग्रवाल (1911–2000)
केदारनाथ अग्रवाल प्रकृति, जीवन और श्रम-सौंदर्य के कवि थे।
उनकी वाणी में नदी की ताजगी, खेतों की हरियाली, मजदूर की थकन और मनुष्य की गरिमा का उजला रूप दिखाई देता है।
उनका काव्य सादगी, सरसता और जीवन के सौंदर्य से भर जाता है-

"नदी तुम हो,
मेरे हृदय की धड़कन-सी।"

उनकी लेखनी में भूमि की गंध, मानवीय ऊष्मा और स्वाभाविक संवेदना का मधुर स्पर्श मिलता है,
जो मन को सहज और निर्मल बना देता है।

त्रिलोचन (1917–2007)
त्रिलोचन सादगी, लोक-संस्कृति और मानवीय अनुभवों के गहन कवि थे।

उनकी कविता में लोक-भाषा की मिठास, जीवन-सत्य की सहजता और मनुष्य की भीतरी गरमी गूँजती है।
उनकी वाणी में अकृत्रिमता और आत्मीयता का अनूठा संगीत है-

"चुनरी में रंग भरूँ कैसे,
मन सूना है आज।"

उनकी लेखनी नैसर्गिक सरलता और मानवीय निकटता का मधुर अनुनाद देती है,
जो पाठक के मन को अपनापन और गहरी शांति से भर देती है।

हरिवंश राय बच्चन (1907–2003)

बच्चन जी हिंदी कविता में भावनाओं की उन्मुक्तता, मानव की अंतर्मन यात्रा और जीवन की गहरी दार्शनिकता के कवि थे।
उनकी वाणी में प्रेम का कोमल संगीत, पीड़ा का मर्मस्पर्श और जीवन के संघर्ष को गले लगाने की अकुलाहट मिलती है।
उनका काव्य आत्मस्वीकृति और आत्ममंथन की सूक्ष्म प्रक्रिया को स्वर देता है-

"मन का हो तो अच्छा,
न हो तो और भी अच्छा।"

उनकी लेखनी आधुनिक मानव के हृदय-संघर्ष का सजीव दस्तावेज बन जाती है।

गोपालदास 'नीरज' (1925–2018)

नीरज जी की कविता में गीतात्मकता, रोमांस और जीवन की धड़कनों का मधुर संगीत बसता है।
उनके शब्दों में प्रेम की मादकता, विरह का कोमल दुख और आशा का स्वच्छ प्रकाश झिलमिलाता है।
उनका काव्य मानवीय संवेदना को सुर-ताल की छुअन के साथ छू लेता है—

"कारवाँ गुजर गया,
गुबार देखते रहे।"

उनकी लेखनी आधुनिक गीतिधारा का स्वर्णिम शिखर है।

गुलज़ार (1934– वर्तमान)

गुलज़ार साहब शब्दों के जादूगर, मौन के कवि और संवेदनाओं के बेहद महीन चित्रकार हैं।
उनकी कविता फुसफुसाती है, चलती हवा की तरह मन को छूती है, और गहरी उदासी में भी उम्मीद का नन्हा दीप जलाती है।
उनके शब्द बेहद छोटे होकर भी जीवन के बड़े सत्यों को उजागर कर देते हैं-

"धूप में निकलो, घटाओं में तैरकर देखो,
ज़िंदगी क्या है, किताबों को छोड़कर देखो।"

उनकी लेखनी आधुनिक कविता की सबसे मृदु, सबसे संवेदनशील धड़कन है।

कुमार विश्वास (1970– वर्तमान)

कुमार विश्वास युवा पीढ़ी की रोमांटिक चेतना के कवि हैं।
उनकी वाणी में प्रेम का प्रवाह, भावुकता की मिठास और श्रृंगार का आधुनिक स्पंदन साफ सुनाई देता है।
उनका काव्य हृदय की धड़कनों का ताजापन लिए हुए है -

"कोई दीवाना कहता है, कोई पागल समझता है।"

उनकी लेखनी नई पीढ़ी के भावविश्व का लोकप्रिय प्रतिनिधित्व करती है।

राहत इंदौरी (1950–2020)
राहत साहब की शायरी में विद्रोह की आग, प्रेम की सच्चाई और आत्मसम्मान की तेजस्विता एक साथ मिलती है।
उनकी आवाज़ में मंच काँप उठता था और उनके शब्द सीधे दिल में उतर जाते थे।
उनका काव्य साहस और आत्मविश्वास की लौ जलाता है-

"खुदा से मेरी एक ही दुआ है,
कि इतना फ़ासला रखे कि पहचान भी न सकूँ।"

उनकी लेखनी इंकलाब और इमोशन का जीवंत संगम है।

केदारनाथ सिंह (1934–2018)
केदारनाथ सिंह सरल भाषा में अत्यंत गहन कविता रचने वाले आधुनिक हिंदी के महत्वपूर्ण कवि हैं।
उनकी वाणी में मिट्टी की गंध, जनजीवन की धड़कन और ग्रामीण सौंदर्य की जीवंतता है।
उनका काव्य प्रकृति और मानव संबंधों की सूक्ष्म परिभाषा प्रस्तुत करता है-

"गेंदे के फूल में
पूरा का पूरा अगस्त बसता है।"

उनकी लेखनी आधुनिक कविता की जड़ों को धरती से जोड़ती है।

धूमिल (1936–1975)
धूमिल जन-संघर्ष, व्यवस्था-विमर्श और तीखे यथार्थवाद के कवि हैं।
उनकी कविता सवाल करती है, झकझोरती है और व्यवस्था के मुखौटे उतारती है।
उनका काव्य पाठक को असहज करके सोचने पर मजबूर कर देता है-

"कविता क्या है?
भाषाओं के जंगल में
खड़ी कोई सच्ची बात।"

उनकी लेखनी आधुनिक हिंदी की सबसे तेज और सबसे धारदार आवाज़ है।

हरी ओम पवार (1953– वर्तमान)
हरी ओम पवार समकालीन हिंदी कविता के वे सशक्त कवि हैं, जिनकी वाणी में राष्ट्रभक्ति, वीरता और भारतीय सांस्कृतिक चेतना का अद्भुत तेज दिखाई देता है।

उनकी कविता में इतिहास की महिमा, धर्म–बल, शौर्य की ज्वाला और मातृभूमि के प्रति गहरा समर्पण एक साथ प्रज्वलित होते हैं।
उनका काव्य सिर्फ पढ़ा नहीं जाता—उसमें गर्जना सुनाई देती है और ऊर्जा महसूस होती है।

उनकी रचनाएँ युवाओं में आत्मगौरव और राष्ट्रीय स्वाभिमान की प्रेरणा भर देती हैं—

"जो झुक जाए तूफ़ानों से,
वह पर्वत कैसा?
जो डर जाए रण के रणभेरी से,
वह पुरुषार्थ कैसा?"

जो पाठक के भीतर राष्ट्र–निष्ठा और कर्तव्य–बोध की लौ प्रज्ज्वलित कर देती है।

विष्णु खरे (1949–2018)
खरे जी की कविता में बुद्धि, विश्लेषण और सत्य की निडर प्रस्तुति है।
उनकी वाणी सीधी, तेज और बेबाक है

"सच बोलना कठिन है
पर ज़रूरी है।"

उनकी लेखनी विचारों का कठोर लेकिन ईमानदार दर्पण है।

अटल बिहारी वाजपेयी (1924–2018)
अटल बिहारी वाजपेयी हिंदी के ओजस्वी, संवेदनशील और अत्यंत प्रभावशाली कवि थे।
उनकी वाणी में राष्ट्रभक्ति, मानवीय करुणा, संघर्ष का साहस और जीवन-दर्शन का अद्भुत संगम दिखाई देता है।
उनकी कविता में एक ओर राष्ट्र के लिए समर्पण की महानता है-

"हार नहीं मानूँगा,
रार नई ठानूँगा।
काल के कपाल पर
लिखूँगा, मिटूँगा नहीं।"

उनकी लेखनी में ओज की ऊँची लहरें, संवेदना की कोमल धारा और जीवन के गहन चिंतन का अनुपम संतुलन मिलता है।
अटल जी का काव्य आज भी पाठक के मन में साहस, विश्वास और राष्ट्र के प्रति निष्ठा की लौ प्रज्ज्वलित कर देता है।

निष्कर्ष:
भारत का काव्य इतिहास केवल शब्दों का इतिहास नहीं, बल्कि यह जीवन, संघर्ष, भक्ति, प्रेम और मानवता की यात्रा है।
हर युग के कवि ने अपने समय का सत्य लिखा —
कबीर ने ईश्वर से संवाद किया, तुलसी ने धर्म को जीवन बनाया, दिनकर ने राष्ट्र को जगाया, और महादेवी ने नारी की आत्मा को स्वर दिया।
कविता आज भी जीवित है — मोबाइल की स्क्रीन पर, पोस्टरों में, गीतों में और मन के भीतर।
कविता का उद्देश्य वही है — मनुष्य को मनुष्य बनाए रखना।"
शब्द जब सत्य बन जाते हैं,
तो कवि अमर हो जाता है।"

साइबर धोखाधडी: बैंकिंग क्षेत्र में चुनौतियाँ, प्रकार, बचाव और समाधान

अखिल दुबे
वरिष्ठ प्रबंधक,एन एमपी ,इलाहाबाद

वर्तमान डिजिटल युग में जहाँ बैंकिंग सेवाएँ इंटरनेट, मोबाइल और एटीएम नेटवर्क तक सिमट गई हैं, वहीं साइबर अपराधों का जाल भी उसी गति से फैला है। अब अपराधी हथियारों से नहीं, बल्कि "की-बोर्ड" से अपराध करते हैं। ग्राहक की जानकारी, पासवर्ड, ओटीपी या कार्ड विवरण चुराकर कुछ ही मिनटों में खाते खाली किए जा सकते हैं।

साइबर धोखाधड़ी केवल तकनीकी समस्या नहीं है, बल्कि यह विश्वास, सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता से जुड़ा हुआ विषय है।

आज के बैंकिंग सिस्टम में नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग, यूपीआई, क्रेडिट/डेबिट कार्ड, ई-वॉलेट, और सोशल इंजीनियरिंग आधारित धोखाधड़ी आम हो गए हैं। यह लेख इन सभी पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डालता है।

1. साइबर धोखाधड़ी की परिभाषा और प्रकृति

"साइबर धोखाधड़ी " का अर्थ है — किसी व्यक्ति या संस्था की डिजिटल या इलेक्ट्रॉनिक जानकारी का दुरुपयोग कर आर्थिक हानि पहुँचाना।

यह अपराध इंटरनेट, मोबाइल एप, ईमेल, एसएमएस, या किसी अन्य डिजिटल माध्यम से किया जाता है।भारत में सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम 2000 (आईटी एक्ट 2000) के अंतर्गत ऐसे अपराधों को परिभाषित किया गया है।

जिनमें अनधिकृत प्रवेश, डेटा चोरी, हैकिंग, धोखाधड़ीपूर्ण इलेक्ट्रॉनिक लेन-देन, पहचान की चोरी आदि सम्मिलित हैं।

2. बैंकिंग क्षेत्र में प्रमुख साइबर धोखाधड़ी के प्रकार

(क) फिशिंग: फिशिंग एक ऐसी तकनीक है जिसमें धोखेबाज ईमेल, एसएमएस या वेबसाइट के माध्यम से बैंक या अन्य संस्थान का रूप धारण कर ग्राहक से गोपनीय जानकारी माँगते हैं।

जैसे:- "आपका खाता बंद होने वाला है, तुरंत लिंक पर क्लिक कर सत्यापित करें।"

ग्राहक डर या जल्दबाजी में लिंक खोलता है, और उसकी लॉगिन जानकारी चोरी हो जाती है।

(ख) स्मिशिंग: स्मिशिंग फिशिंग का ही मोबाइल एसएमएस संस्करण है। अपराधी किसी वैध बैंक नंबर जैसा दिखने वाला एसएमएस भेजते हैं, जिसमें ओटीपी या लिंक शेयर करने को कहा जाता है।

जैसे:- आपके मोबाइल पर एक SMS आता है—

"आपका बैंक खाता ब्लॉक होने वाला है। तुरंत इस लिंक पर क्लिक करें: http://bank-verify123.com"

अगर आप उस लिंक पर क्लिक करते हैं, तो वह फर्जी वेबसाइट आपका एटीएम पिन, पासवर्ड, ओटीपी आदि

(घ) कार्ड स्किमिंग: एटीएम या पॉस मशीन में एक सूक्ष्म उपकरण लगाकर कार्ड का डेटा कॉपी कर लिया जाता है। फिर उसी डेटा से क्लोन कार्ड बनाकर पैसे निकाले जाते हैं।

जैसे: आप एटीएम में पैसा निकालने जाते हैं। मशीन पर एक छोटा सा नकली डिवाइस लगा होता है जो देखने में बिल्कुल असली स्लॉट जैसा लगता है।

जब आप अपना कार्ड स्वाइप/इंसर्ट करते हैं, तो वह डिवाइस आपके कार्ड का डेटा कॉपी कर लेता है। साथ ही, पासवर्ड चोरी करने के लिए कीपैड पर एक छोटा सा कैमरा या नकली कीपैड कवर भी लगा होता है।

बाद में उसी डेटा का उपयोग करके आपका डुप्लीकेट कार्ड बनाकर खाते से पैसे निकाल लिए जाते हैं।

(ङ) मॉलवेयर/स्पाईवेयर अटैक: कुछ लिंक या ऐप्स ऐसे होते हैं जिनमें वायरस या ट्रोजन हॉर्स होता है। इन्हें डाउनलोड करते ही मोबाइल या कंप्यूटर की जानकारी अपराधियों के पास पहुँच जाती है।ये बैकग्राउंड में पासवर्ड, पिन, स्क्रीनशॉट आदि रिकॉर्ड करते हैं।

जैसे: आपके फोन पर एक मैसेज आता है— "अपना केवाईसी अपडेट करें, ये ऐप इंस्टॉल करें"।

आप ऐप इंस्टॉल करते ही, वह स्पायवेयर आपके फोन की गतिविधियों—जैसे ओटीपी, पासवर्ड, लोकेशन—चुपचाप रिकॉर्ड करके हैकर को भेजने लगता है।

(च) यूपीआई धोखाधड़ी: आजकल सबसे तेज़ी से बढ़ता साइबर अपराध यूपीआई से जुड़ा है। अपराधी "रिवर्स पेमेंट" के नाम पर अनुरोध भेजते हैं और ग्राहक गलती से "अनुमोदन" कर देता है या फिर सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म पर क्यूआर कोड भेजकर पैसे निकलवा लेते हैं।

जैसे: कोई व्यक्ति खुद को बैंक अधिकारी बताकर आपको कॉल करता है और कहता है—

"मैं आपकी केवाईसी अपडेट कर रहा हूं, आपको सिर्फ एक यूपीआई कलेक्ट रिक्वेस्ट 'अनुमोदित करनी है।"

आप जैसे ही अनुमोदन करते हैं, आपके खाते से पैसे तुरंत कट जाते हैं।

(छ) ईमेल हैकिंग और बिजनेस ईमेल कम्प्रोमाइज: कॉर्पोरेट खातों या ऑफिस ईमेल्स में घुसकर अपराधी किसी अधिकृत व्यक्ति की पहचान में संदेश भेज देते हैं — "कृपया यह भुगतान तुरंत करें।"

इससे बड़ी राशि गलत खाते में ट्रांसफर हो जाती है।

जैसे: हैकर किसी कंपनी के अकाउंट विभाग के ईमेल को हैक कर लेता है और सप्लायर को मेल भेजता है—

"कृपया इस नए बैंक खाते में पेमेंट ट्रांसफर करें।"

सप्लायर विश्वास करके पैसा भेज देता है, और पैसा हैकर के खाते में चला जाता है।

(ज) निवेश और लोन धोखाधड़ी: ऑनलाइन निवेश या लोन के नाम पर फर्जी ऐप बनाकर अपराधी दस्तावेज़ और पैसा दोनों ले लेते हैं।

ये एप्स अक्सर "गूगल प्ले स्टोर" जैसे प्लेटफॉर्म पर नकली नामों से मौजूद रहते हैं।
जैसे: एक फर्जी एजेंट कॉल करके कहता है— "₹10,000 लगाइए, 1 महीने में ₹50,000 रिटर्न मिलेगा।"
लोग विश्वास में आकर पैसे भेज देते हैं, लेकिन न रिटर्न मिलता है और न एजेंट दोबारा मिलता है।

(झ) सोशल मीडिया धोखाधड़ी: फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप जैसे प्लेटफॉर्म पर मित्र या रिश्तेदार बनकर पैसे माँगने या लिंक भेजने के मामले तेजी से बढ़े हैं।
जैसे: कोई व्यक्ति फर्जी इंस्टाग्राम प्रोफ़ाइल बनाकर किसी दोस्त के नाम से मैसेज भेजता है— "मैं मुसीबत में हूँ, तुरंत ₹5,000 भेज दो।"
लोग भरोसा करके पैसे भेज देते हैं, बाद में पता चलता है कि अकाउंट फेक था।

(ञ) केवाईसी अपडेट धोखाधड़ी: "आपका केवाईसी अधूरा है, खाता बंद हो जाएगा" – ऐसा संदेश भेजकर ग्राहक को लिंक पर क्लिक करवाया जाता है। वह लिंक नकली बैंक साइट होती है, जहाँ दर्ज की गई सभी जानकारी अपराधियों तक पहुँच जाती है।
जैसे: किसी ग्राहक को मैसेज आता है— "आपका केवाईसी अपडेट नहीं है, तुरंत इस लिंक पर क्लिक कर विवरण भरें, नहीं तो खाता बंद हो जाएगा।"
लिंक फर्जी होता है और विवरण भरते ही धोखेबाज़ खाते से पैसे निकाल लेते हैं।

(ट) साइबर बुलिंग: साइबर बुलिंग वह प्रक्रिया है जिसमें किसी व्यक्ति को डिजिटल माध्यमों—जैसे मोबाइल, सोशल मीडिया, ई-मेल, चैट, गेमिंग प्लेटफॉर्म आदि—के जरिए जानबूझकर परेशान, अपमानित, धमकाया या बदनाम किया जाता है।
जैसे: स्कूल के बच्चे किसी सहपाठी की फोटो एडिट कर सोशल मीडिया पर मज़ाक उड़ाते हुए पोस्ट कर देते हैं और बार-बार अपमानजनक कमेंट करते रहते हैं।
यह पारंपरिक बुलिंग से भी ज्यादा हानिकारक हो सकता है, क्योंकि यह 24×7, अनाम तरीके से और कम समय में ज्यादा लोगों तक पहुंच सकता है।

(ठ) डिजिटल अरेस्ट(एक तरह का साइबर बुलिंग): जिसमें ठग खुद को पुलिस, सीबीआई, आरबीआई, साइबर सेल या किसी सरकारी अधिकारी के रूप में बताकर पीड़ित को डराते-धमकाते हैं और कहते हैं कि:

आपका आधार/बैंक खाता अपराध में शामिल है।
आपके नाम पर कोई पार्सल/सिम कार्ड मिला है।
आपने मनी लॉन्ड्रिंग या अन्य अपराध किया है।
इसके बाद वे पीड़ित को धमकाकर वीडियो कॉल पर रोककर रखते हैं (यानी 'डिजिटल तरीके से हिरासत') और पैसे ठग लेते हैं।

डिजिटल अरेस्ट के प्रमुख प्रकार:

सरकारी अधिकारी बनकर डराना
ठग खुद को –पुलिस अधिकारी सीबीआई,एनआईए अधिकारी, साइबर सेल आरबीआई/बैंक अधिकारी बताते हैं और पीड़ित को अपराध में फँसाने की झूठी धमकी देते हैं।

पार्सल/कूरियर फ्रॉड
कहते हैं कि आपके नाम से भेजे गए पार्सल में ड्रग्स, नकदी या पासपोर्ट मिला है, इसलिए आपको जाँच में "हिरासत" में लिया जा रहा है।

बैंक/आधार सत्यापन के नाम पर डिजिटल अरेस्ट:
ओटीपी या केवाईसी अपडेट के नाम पर वीडियो कॉल शुरू कराकर पीड़ित को घंटों तक डराते रहते हैं और धीरे-धीरे बैंक विवरण ले लेते हैं।

सोशल मीडिया अकाउंट या सिम कार्ड का दुरुपयोग
ठग कहते हैं कहते हैं कि आपके नंबर/अकाउंट से कोई अपराध या साइबर क्राइम हुआ है इसलिए आपको "डिजिटल हिरासत" में रखा जा रहा है।

लाइव लोकेशन और स्क्रीन शेयर मांगना
ठग कहते हैं कि जाँच हेतु:
कैमरा ऑन रखें
स्क्रीन शेयर करें
बैंक ऐप खोलकर दिखाएँ
जिसका उपयोग वे ठगी में करते हैं।

संक्षेप में
डिजिटल अरेस्ट एक साइबर अपराध है, जिसमें अपराधी वीडियो कॉल पर व्यक्ति को मानसिक रूप से 'हिरासत' में लेते हैं, डराते हैं और उससे पैसे व गोपनीय जानकारी हासिल करते हैं।

3. साइबर अपराधों के बढ़ने के कारण

i) डिजिटल लेन-देन का तीव्र विस्तार – यूपीआई और इंटरनेट बैंकिंग की लोकप्रियता ने नए अपराध अवसर बनाए।

Ii) ग्राहक की असावधानी – ओटीपी या पासवर्ड साझा करना।

Iii) कम तकनीकी जागरूकता – ग्रामीण या बुजुर्ग उपभोक्ता आसानी से भ्रमित हो जाते हैं।

Iv) सोशल इंजीनियरिंग – अपराधी मनोवैज्ञानिक तरीके से विश्वास जीत लेते हैं।

V) साइबर सुरक्षा का अभाव – कमजोर पासवर्ड, पुराना सॉफ़्टवेयर, अनएन्क्रिप्टेड नेटवर्क।

Vi). विदेशी अपराध गिरोहों की सक्रियता – भारत में सस्ते इंटरनेट और बड़े यूज़र बेस के कारण यह प्रमुख टार्गेट बन चुका है।

4. बैंकिंग संस्थानों पर प्रभाव:
साइबर धोखाधड़ी केवल ग्राहक को नहीं बल्कि बैंक की

प्रतिष्ठा, विश्वसनीयता और संचालन सुरक्षा को भी प्रभावित करता है।
प्रमुख प्रभाव इस प्रकार हैं-

i) ग्राहक विश्वास में कमी
Ii) वित्तीय हानि और मुआवज़े का दबाव
Iii) नियामकीय जुर्माने और कानूनी कार्यवाही
Iv) ब्रांड छवि पर नकारात्मक असर
Iv) डेटा ब्रीच से जुड़ी गोपनीय सूचनाओं का लीक होना

5. भारत में साइबर सुरक्षा हेतु कानूनी प्रावधान

i) सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम, 2000 (आईटी एक्ट 2000) संशोधित वर्ष 2008 – साइबर अपराधों की कानूनी रूपरेखा।

ii) भारतीय न्याय संहिता (बीएनएस) की धाराएँ – धोखाधड़ी, जालसाजी, पहचान चोरी आदि पर दंड।

Iii) रिज़र्व बैंक के दिशा-निर्देश –
बैंकों को दो-स्तरीय प्रमाणीकरण (2FA) लागू करना आवश्यक है।
ग्राहकों को साइबर शिक्षा अभियान द्वारा जागरूक करना अनिवार्य है।
धोखाधड़ी रिपोर्टिंग के लिए 24x7 हेल्पलाइन और शिकायत तंत्र।
Iv) भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रक्रिया दल (सीईआरटी-आईएन) — साइबर हमलों की जाँच और रोकथाम के लिए राष्ट्रीय एजेंसी।

V) राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल (www.cybercrime.gov.in) – शिकायत दर्ज करने हेतु केंद्रीकृत प्लेटफ़ॉर्म।

6. साइबर धोखाधड़ी से बचाव के उपाय

(क) ग्राहकों के लिए सावधानियाँ

1. कभी भी पासवर्ड, पिन या ओटीपी साझा न करें।
2. केवल अधिकृत बैंक वेबसाइट या ऐप का उपयोग करें।
3. ईमेल या एसएमएस में भेजे गए लिंक पर क्लिक न करें।
4. यूआरएल की जांच करें — "https://" से शुरू होना चाहिए।
5. सार्वजनिक वाई-फाई पर बैंकिंग न करें।
6. संदिग्ध ऐप या फाइल डाउनलोड न करें।
7. अजनबी QR कोड स्कैन न करें।
8. रोज़ाना खाते का बैलेंस व लेन-देन देखें।
9. मजबूत पासवर्ड रखें — अक्षर, अंक व विशेष चिन्ह का संयोजन।
10. धोखाधड़ी की स्थिति में तुरंत बैंक और साइबर पोर्टल पर शिकायत करें।
11.धोखाधड़ी की स्थिति साइबर अपराध की रिपोर्ट करने के लिए राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर 1930 पर तुरंत कॉल करें।

(ख) बैंक और संस्थानों के लिए उपाय

i) टू-फैक्टर ऑथेंटिकेशन (2FA) अनिवार्य करें।

li) रियल टाइम धोखाधड़ी मॉनिटरिंग सिस्टम अपनाएँ।
lii) कर्मचारियों के लिए साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण।
iv) ग्राहक जागरूकता अभियान — एसएमएस , ईमेल, पोस्टर, सोशल मीडिया।
v) डेटा एन्क्रिप्शन और सिक्योर सर्वर का उपयोग।
vi) धोखाधड़ी डिटेक्शन एआई टूल्स का प्रयोग।
vii) शिकायत निवारण प्रणाली को तीव्र और पारदर्शी बनाना।
vii) राष्ट्रीय हेल्पलाइन नंबर पर तुरंत कॉल करें।

8. साइबर जागरूकता अभियान और पहल

भारत सरकार और आरबीआई ने "साइबर सुरक्षा जन-जागरण अभियान", "डिजिटल सुरक्षा सप्ताह", "सुरक्षित बैंकिंग" जैसे कार्यक्रम प्रारंभ किए हैं।
बैंकों द्वारा भी "सुरक्षित डिजिटल बैंकिंग – सावधानी ही सुरक्षा है" जैसे संदेश प्रसारित किए जाते हैं।

मुख्य स्लोगन:
"साइबर धोखाधड़ी से बचना है आसान, न बताएं ओटीपी, पासवर्ड या पिन चाहे हो जान या पहचान।"

"साइबर ठगों की नई चाल,डिजिटल अरेस्ट का जाल।"

"साइबर जाल में मत उलझना,
सोच-समझकर ही है चलना।"

"क्लिक से पहले सोचो ज़रा,
सावधानी ही है असली धरा।"

9. भविष्य की दिशा

साइबर सुरक्षा अब केवल "आईटी विभाग" का विषय नहीं रहा। यह कॉर्पोरेट गवर्नेंस, ग्राहक सेवा, और राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा बन चुका है।
भविष्य में बैंकिंग प्रणाली को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), ब्लॉकचेन,बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण, और क्वांटम एन्क्रिप्शन जैसी तकनीकों को अपनाकर सुरक्षा को और मजबूत करना होगा।
साथ ही, साइबर अपराधों की सटीक जाँच और त्वरित दंड सुनिश्चित करना भी आवश्यक है।

10. निष्कर्ष

डिजिटल बैंकिंग ने जहाँ जीवन को सरल और सुविधाजनक बनाया है, वहीं इसके साथ नए खतरे भी जुड़े हैं।
साइबर अपराधी निरंतर नए तरीके खोज रहे हैं, इसलिए सतर्कता और जागरूकता ही सबसे बड़ा हथियार है।

बैंक और ग्राहक दोनों की संयुक्त जिम्मेदारी है कि

सुरक्षा नियमों का पालन करें,

कोई भी गोपनीय जानकारी साझा न करें,

और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की तुरंत सूचना दें।
"सुरक्षित बैंकिंग, सजग ग्राहक — यही साइबर युग की सच्ची सुरक्षा नीति है।"

मार्कण्डेय महादेव — मृत्यु पर विजय का पवित्र तीर्थ"

सत्यानंद महेश्वरी
वरिष्ठ प्रबंधक,अंचल कार्यालय,वाराणसी

जहाँ मृत्यु भी हार मान गई:

वाराणसी के पूर्वी क्षेत्र में, गंगा और गोमती के संगम के निकट एक प्राचीन स्थल स्थित है — कैथी नामक स्थान, जहाँ अवस्थित है मार्कण्डेय महादेव मंदिर।

यह वही पवित्र भूमि है जहाँ भगवान शिव ने स्वयं प्रकट होकर अपने परम भक्त ऋषि मार्कण्डेय को मृत्यु के ग्रास से बचाया था।

इसीलिए यह स्थान न केवल श्रद्धा का केन्द्र है, बल्कि अमृतत्व का प्रतीक भी माना जाता है — जहाँ भक्ति ने काल पर विजय पाई थी।

पौराणिक कथा : अमरत्व का वरदान

मार्कण्डेय ऋषि, मृकंडु ऋषि और मरुदवती के पुत्र थे। उनके माता-पिता ने संतान प्राप्ति के लिए वर्षों तक तप किया। जब भगवान शिव उनके सामने प्रकट हुए, तो उन्होंने दो विकल्प दिए —

1 एक अल्पायु लेकिन अत्यंत बुद्धिमान और भक्त पुत्र
2 या दीर्घायु लेकिन अज्ञानी पुत्र।

ऋषि दंपत्ति ने पहला विकल्प चुना।

फलस्वरूप मार्कण्डेय का जन्म हुआ — एक विलक्षण बालक, जो 16 वर्ष की आयु तक जीवित रहने वाला था।

ज्यों-ज्यों वह बड़ा हुआ, उसकी भक्ति भगवान शिव के प्रति गहराती गई। जब उसकी मृत्यु का समय निकट आया, तो उसने भगवान शिव की मूर्ति के आगे बैठकर महामृत्युंजय मंत्र का जप आरंभ कर दिया—

"त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।।"

जब 16 वर्ष की आयु पूर्ण होने पर यमराज स्वयं उसकी आत्मा लेने आए, तो मार्कण्डेय ने शिवलिंग को आलिंगन कर लिया।

यमराज ने जब उस पर पाश फेंका, तो फंदा गलती से भगवान शिव पर पड़ गया।

फंदे के शिवलिंग पर पड़ते ही महादेव शिव वहाँ प्रकट हुए और क्रोधित होकर यमराज को रोक दिया।

उन्होंने अपने भक्त को चिरंजीवी (अजर-अमर) होने का वरदान दिया।

मार्कण्डेय महादेव — मृत्यु पर विजय का पवित्र तीर्थ"

बाद में ऋषि मार्कण्डेय ने मार्कण्डेय पुराण की रचना की थी ,जिसमें दुर्गा सप्तशती भी शामिल है। मार्कण्डेय पुराण 18 पुराणों में से एक है। यह एक संस्कृत ग्रंथ है। यह सबसे प्राचीन पुराणों में से एक है,जिसमें 137 अध्याय है। मार्कण्डेय पुराण में लगभग 9000 श्लोक है जो पौराणिक कथाओं,धर्म,समाज आदि सहित विविध विषयों को प्रस्तुत करते हैं।

मंदिर का इतिहास:

मार्कण्डेय महादेव मंदिर का इतिहास महाभारत काल तक जाता है। कहा जाता है कि यहाँ पांडवों ने अपने अज्ञातवास के समय पूजा की थी।

प्राचीन शिलालेखों और लोककथाओं के अनुसार यह मंदिर गुप्तकाल या उससे भी पूर्व का है।

वर्तमान में मंदिर का निर्माण पंचकोणीय संरचना में है, जिसमें गर्भगृह में स्थित शिवलिंग अत्यंत प्राचीन है और कहा जाता है कि स्वयंप्रकट (स्वयं निर्मित) है।

मंदिर परिसर में भगवान गणेश, पार्वती, नंदी और नवरात्रि के दौरान स्थापित देवी दुर्गा की प्रतिमाएँ भी हैं। हर महाशिवरात्रि, श्रावण मास और मृत्युंजय एकादशी पर यहाँ भक्तों का सैलाब उमड़ता है।

स्थान और पहुँच मार्ग:

स्थान:

मार्कण्डेय महादेव मंदिर वाराणसी से लगभग 30 किलोमीटर की दूरी पर कैथी गाँव में स्थित है, जो गाजीपुर मार्ग पर पड़ता है।

कैसे पहुँचें:

रेल मार्ग से: वाराणसी जंक्शन या मंडुवाडीह स्टेशन से टैक्सी या ऑटो द्वारा लगभग 45 मिनट में मंदिर पहुँचा जा सकता है।

सड़क मार्ग से: एनएच-31 मार्ग पर वाराणसी से गाजीपुर जाते हुए कैथी में बाईं ओर का मार्ग मंदिर तक पहुँचाता है।

वायु मार्ग से: लाल बहादुर शास्त्री अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा, बाबतपुर,वाराणसी यहाँ से लगभग 50 किमी दूर है।

नदी संगम:

मंदिर के निकट गंगा और गोमती का संगम स्थल है। यहाँ स्नान करने और पूजा करने से पापों का नाश होता है और दीर्घायु होती है, ऐसी मान्यता है।

धार्मिक और सांस्कृतिक महत्व:

मार्कण्डेय महादेव केवल एक शिवमंदिर नहीं, बल्कि जीवन की नश्वरता पर चेतना का केंद्र है।

यह तीर्थ हमें सिखाता है कि सच्ची भक्ति से मृत्यु जैसी अनिवार्यता भी परास्त की जा सकती है।

यहाँ आने वाले श्रद्धालु मृत्युंजय मंत्र का जाप करते हैं और अपने परिवार के स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं मोक्ष की कामना करते हैं।

विशेष रूप से श्रावण मास में यहाँ कांवड़ यात्रा का भव्य आयोजन होता है, जिसमें हज़ारों शिवभक्त गंगाजल लेकर आते हैं।

स्थानीय लोककथाओं में कहा जाता है कि यहाँ माँ पार्वती ने भी तप किया था, और इसी भूमि से मृत्युंजय परंपरा का आरंभ हुआ।

मंदिर परिसर की विशेषताएँ:

मुख्य शिवलिंग — प्राकृतिक शिला से निर्मित, जलाभिषेक से सदैव तर।

मार्कण्डेय तपस्थली जहाँ ऋषि ने महामृत्युंजय जप किया

मार्कण्डेय महादेव — मृत्यु पर विजय का पवित्र तीर्थ"

गंगा–गोमती संगम घाट — पवित्र स्नान स्थल।

नंदी द्वार — मंदिर के प्रवेश द्वार पर विशाल नंदी प्रतिमा।

नवरात्रि एवं शिवरात्रि मेला — स्थानीय लोककलाओं, भजनों और कवि सम्मेलनों से युक्त।

आज का महत्व:

वर्तमान समय में यह तीर्थ न केवल धार्मिक दृष्टि से बल्कि पर्यटन और संस्कृति के दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है।

वाराणसी की प्राचीनता में यह स्थान जीवन और मृत्यु के मध्य एक दार्शनिक संतुलन प्रस्तुत करता है।

मार्कण्डेय महादेव मंदिर आज भी इस सत्य का प्रतीक है कि—

"भक्ति से बड़ा कोई अस्त्र नहीं, और शिव से बड़ा कोई रक्षक नहीं।"

अमरत्व की भूमि:

मार्कण्डेय महादेव केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि आस्था, अमरता और आत्मविश्वास का प्रतीक है।

यहाँ का हर पत्थर, हर घंटा और हर जलधारा यही कहती है कि —

"जिसने शिव का स्मरण किया, वह मृत्यु से नहीं डरता।"

वाराणसी से कुछ ही दूरी पर स्थित यह मंदिर श्रद्धालुओं के लिए एक आध्यात्मिक ऊर्जा केन्द्र है —

जहाँ पहुँचकर मन को शांति और आत्मा को अमरत्व का अनुभव होता है।

वाराणसी की देव दीपावली:आस्था, परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत संगम"

रवि प्रताप सिंह

वरिष्ठ प्रबन्धक,सुन्दरपुर शाखा

वाराणसी की देव दीपावली: आस्था, परंपरा और आधुनिकता का अद्भुत संगम

वाराणसी — भारत की आध्यात्मिक राजधानी, जिसे काशी और बनारस के नाम से भी जाना जाता है — हजारों वर्षों से धर्म, संस्कृति और परंपराओं का जीवंत केंद्र रहा है। इन्हीं परंपराओं में से एक है देव दीपावली, एक ऐसा पर्व जो वाराणसी की पहचान बन चुका है। कार्तिक पूर्णिमा की रात्रि को जब गंगा तट दीपों की मालाओं से ओत-प्रोत हो उठता है, तो ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं देवता धरती पर उतर आए हों।

देव दीपावली आज केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि सांस्कृतिक धरोहर, पर्यटन आकर्षण, पर्यावरण संदेश और आधुनिक तकनीक के संगम का विराट उत्सव बन चुकी है। इस वर्ष 5 नवंबर 2025 को आयोजित होने जा रही देव दीपावली विशेष रूप से भव्य होने वाली है, जिसमें लगभग 25 लाख दीप घाटों पर प्रज्वलित किए जाएंगे।

देव दीपावली क्यों मनाई जाती है — ऐतिहासिक और पौराणिक पृष्ठभूमि

देव दीपावली दिवाली के ठीक 15 दिन बाद कार्तिक पूर्णिमा के दिन मनाई जाती है। पौराणिक कथा के अनुसार इसी दिन भगवान शिव ने त्रिपुरासुर नामक राक्षस का संहार किया था, जो तीन लोकों में आतंक फैलाकर देवताओं और ऋषियों को कष्ट दे रहा था। भगवान शिव ने अपने दिव्य अस्त्र 'पाशुपतास्त्र' से उसकी तीनों पुरियों—त्रिपुर—का विनाश किया। इसलिए इस दिवस को त्रिपुरोत्सव या देव दीपावली कहा गया।

त्रिपुरासुर-वध के बाद देवताओं ने गंगा किनारे दीप जलाकर भगवान शिव की आराधना की। ऐसा कहा जाता है कि उसी दिन से यह परंपरा शुरू हुई और आज भी वाराणसी में वही दृश्य लाखों दीपों के माध्यम से जीवंत हो उठता है।

भूतकाल में देव दीपावली का स्वरूप

इतिहासकार बताते हैं कि प्राचीन व मध्यकाल में देव दीपावली मुख्यतः धार्मिक स्नान, दीपदान और शिव-पूजन पर केंद्रित थी। पुराने समय में वाराणसी के 84 घाटों पर साधु-संत, गृहस्थ और तीर्थयात्री मिलकर तेल के दीये जलाते थे।

- दीपदान हाथ से मिट्टी के दीयों में होता था।
- गंगा स्नान को विशेष पुण्यकारी माना जाता था।
- मंदिरों में भजन, कृतन और यज्ञ का आयोजन होता था।
- घाटों पर केवल स्थानीय लोग और कुछ तीर्थयात्री आते थे।

उस समय इस पर्व का स्वरूप शांत, सरल और आध्यात्मिक था—परंतु धीरे-धीरे इसकी प्रसिद्धि बढ़ती गई।

धार्मिक महत्ता: क्यों माना जाता है यह पर्व विशेष

देव दीपावली को धार्मिक दृष्टि से अत्यंत पवित्र माना गया है।
कार्तिक पूर्णिमा का गंगा स्नान अक्षय पुण्य देता है।
दीपदान से पापों का नाश होता है और सौभाग्य में वृद्धि होती है।
माना जाता है कि इस दिन देवता धरती पर अवतरित होकर काशी में भ्रमण करते हैं।
शिव-भक्तों के लिए यह दिन 'त्रिपुरारी पूर्णिमा' के रूप में शिव-आराधना का मुख्य अवसर है।

"हर हर गंगे" और "हर हर महादेव" के जयघोष के बीच गंगा आरती की दिव्य ध्वनि का अनुभव लाखों लोगों की आस्था को नए प्रकाश से भर देता है।

वर्तमान में देव दीपावली का स्वरूप — भव्यता, तकनीक और सांस्कृतिक उत्साह

आज का वाराणसी पहले से कहीं अधिक भव्यता के साथ देव दीपावली मनाता है।
पहले यह केवल धार्मिक अनुष्ठान था, अब यह आध्यात्मिकता, कला, संस्कृति, पर्यटन और तकनीक—इन सभी का संगम बन गया है।

1. लाखों दीपों से जगमगाते घाट

हर वर्ष दीपों की संख्या बढ़ती जा रही है।
2025 में लगभग 25 लाख दीप प्रज्वलित किए जाएंगे, जिनमें से
— लगभग 1 लाख दीप पर्यावरण हितैषी गाय के गोबर से निर्मित हैं।
— पूरे 84 घाटों को सजाया जाता है।
— अस्सी, दशाश्वमेध, चेतसिंह, मणिकर्णिका, पंचगंगा, राजघाट—सब दीपमालाओं से दैदीप्यमान हो उठते हैं।

2. आधुनिक तकनीक का प्रयोग
गंगा तट पर 3D प्रोजेक्शन मैपिंग

- लेजर शो
- ड्रोन शो
- संगीत-नृत्य कार्यक्रम
- थीम आधारित इंस्टॉलेशन

इन सबसे यह पर्व नए दौर की टेक्नोलॉजी के साथ और भी प्रभावशाली बन गया है।

3. ग्रीन काशी पहल

- ग्रीन पटाखे
- सिंगल-यूज़ प्लास्टिक पर रोक
- साफ-सफाई अभियान
- पर्यावरण अनुकूल दीयों का उपयोग

इन प्रयासों से देव दीपावली पर्यावरण के अनुकूल उत्सव बनता जा रहा है।

4. सांस्कृतिक कार्यक्रमों की बहार

- लोक व शास्त्रीय संगीत
- कथक-नृत्य
- बनारसी ताना-बाना व हस्तशिल्प की प्रदर्शनी
- बनारसी व्यंजनों के स्टॉल

इस दिन पूरा शहर एक सांस्कृतिक मेले में बदल जाता है।

वैश्विक आकर्षण और पर्यटन

आज देव दीपावली न केवल भारतीयों का, बल्कि विश्व का उत्सव बन चुकी है।

देश-विदेश से लाखों पर्यटक, फोटोग्राफर और शोधकर्ता काशी पहुँचते हैं।

- घाटों से क्रूज पर दीपदर्शन
- नावों से आरती का अद्भुत नज़ारा
- गंगा किनारे योग, ध्यान और आध्यात्मिक शिविर
- बनारस की गलियाँ, संस्कृति और खानपान का अनुभव

यही सब मिलकर इसे एक वैश्विक आयोजन बना देता है।

देव दीपावली की सामाजिक महत्ता

यह पर्व समाज में एकता, सहयोग और सेवा की भावना को बढ़ाता है —

- हजारों स्वयंसेवक दीप सजाने में सहयोग करते हैं।
- स्थानीय समुदाय घाटों की साफ-सफाई में भाग लेते हैं।
- कई NGO और स्कूल गंगा संरक्षण का संदेश देते हैं।
- कलाकार, विद्यार्थी, व्यापारी, साधु—सब मिलकर इसे सफल बनाते हैं।

यही सामूहिक भावना देव दीपावली को केवल एक त्योहार नहीं, बल्कि काशी की पहचान बनाती है।

निष्कर्ष

देव दीपावली केवल दीपों की रोशनी नहीं, बल्कि काशी की आत्मा का प्रकाश है।

यह त्योहार भूतकाल की परंपरा, वर्तमान की तकनीक, और भविष्य की पर्यावरण चेतना—सभी को एक सूत्र में बांधता है।

परंपरा में आध्यात्मिकता, आधुनिकता में नवाचार और सांस्कृतिक रूप में अनंत विविधता—इन सबका अद्भुत संगम देव दीपावली को विश्व-स्तरीय उत्सव बनाता है।

कहानी

संघर्ष की लहरों पर सवार रमेश: सपनों से शिखर तक की यात्रा

इन्द्रदेव कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक अंचल कार्यालय,वाराणसी

यह कहानी एक ऐसे युवक की है, जिसने अत्यंत निर्धन परिवार में जन्म लिया। उसके पिता एक प्राथमिक विद्यालय में साधारण शिक्षक थे। उस बच्चे का नाम रमेश था। बचपन से ही रमेश एक बड़ा खिलाड़ी बनने का सपना देखता था। उसके पिता उसकी प्रतिभा और योग्यता को शुरुआती दिनों से ही पहचान चुके थे और हमेशा उसे प्रोत्साहित किया करते थे।

रमेश अपने लक्ष्य को हमेशा ध्यान में रखता और उसी के बारे में सोचता रहता था। हालांकि आर्थिक स्थिति कमजोर थी और उसकी सभी आवश्यकताएँ पूरी नहीं हो पाती थीं, पर वह इस बात को समझते हुए मेहनत और लगन से अपने सपने की ओर बढ़ता रहा। उसके घर में कुल तीन लोग थे, और उसके पिता अक्सर उसे नदी किनारे घूमने ले जाते थे। रमेश लहरों को बहते हुए देखता और सोचता—"ये लहरें कभी रुकती नहीं, बस अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती रहती हैं।" यही सोच उसे और अधिक मेहनत करने की प्रेरणा देती।

एक दिन उसके गाँव में खेल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। रमेश ने भी उसमें भाग लिया और अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। उसके पिता, जो हर कदम पर उसके साथ थे, उसकी इस सफलता से बहुत खुश हुए। इसके बाद उसका आत्मविश्वास बढ़ता गया और उसने अपनी उपलब्धियों में निरंतर वृद्धि की।

समय के साथ रमेश एक बड़ा खिलाड़ी बन गया। वह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सर्वोच्च मुकाम हासिल करने का सपना देखता था और उसके लिए कठोर मेहनत करता रहा। अंततः उसे अपने देश की तरफ से खेलने का अवसर मिला—वही अवसर जिसका इंतज़ार वह बचपन से कर रहा था। वह अपने देश के लिए खेला और महत्वपूर्ण पुरस्कार भी जीता।

अपनी इस उपलब्धि के लिए उसे देश की ओर से सर्वोच्च खिलाड़ी का प्रमाण पत्र मिला। रमेश ने यह सम्मान अपने पिता को समर्पित किया,

जिन्होंने उसे हमेशा प्रेरणा और समर्थन दिया था।

कहानी

"खोई हुई राहों की तलाश"

मकरध्वज त्रिपाठी
वरिष्ठ प्रबंधक,अंचल कार्यालय,वाराणसी

जीवन में कभी-कभी कुछ छोटी-छोटी घटनाएँ भी गहरे एहसास करा जाती हैं।
आज शाम समुद्र किनारे टहलते हुए मेरी नज़र अचानक अपने एक पुराने मित्र पर पड़ी—
समीर!
हाँ, शायद समीर जैन ही नाम था उसका, जितना मुझे याद आ रहा था।
लगभग 10–12 वर्ष हो चुके थे कॉलेज की पढ़ाई पूरी किए हुए।

समीर जैन हमारे कॉलेज का एक ऐसा छात्र था, जो हर किसी की नजरों में खास था—तेज़, समझदार और बेहद अलग सोच वाला। जहाँ ज्यादातर लड़के-लड़कियाँ इस सोच में रहते थे कि जैसे-तैसे पढ़ाई पूरी की जाए, परीक्षा से पहले की रात रटकर अच्छे ग्रेड ले आए जाएँ और फिर किसी भी तरह की नौकरी मिल जाए, वहीं समीर की सोच बिल्कुल विपरीत थी।

वह मानता था कि कॉलेज की डिग्री से बड़ा ज्ञान किताबों, अनुभवों और अपने अध्यापकों से सीखने में छिपा है।

वह लगभग हर शैक्षणिक प्रतियोगिता में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेता और अक्सर प्रथम आता।
छात्रावास के उसके छोटे से कमरे की दीवारें प्रमाण पत्रों और पुरस्कारों से भरी रहती थीं। पढ़ाई की मेज पर हमेशा नवीनतम किताबें, तैयार नोट्स और उसकी मेहनत की सुगंध चमकती रहती थी।

इन सबके बावजूद वह हर वर्ष की परीक्षाओं में अव्वल रहता। कॉलेज के हर व्यक्ति को लगता था कि यह असाधारण सा लड़का जीवन में निश्चित रूप से कुछ अद्भुत करेगा।

लेकिन जीवन अपने हर मोड़ पर इंसान को नई चुनौतियों, नए दाँव-पेंच और नए अनुभवों से रूबरू कराता है।

कॉलेज की डिग्री लेकर जहाँ अधिकतर लोग नौकरी की तलाश में लग गए, सरकारी परीक्षाओं की तैयारी में जुट गए, वहीं समीर ने अलग राह चुनी।
उसने सोचा—
वह नौकरी लेने वालों की कतार में नहीं, नौकरी देने वालों की पंक्ति में खड़ा होगा।
अपने अनुभव, आदर्शवादी सोच और पढ़ाई से मिले आत्मविश्वास के साथ उसने एक कृषि-आधारित व्यापार शुरू करने का निश्चय किया। वह चाहता था कि वह समाज में बदलाव लाए, किसानों के जीवन में सुधार करे, देश के लिए कुछ सार्थक कर सके।

"खोई हुई राहों की तलाश" और "बोली अनमोल है"

लेकिन असली दुनिया में कदम रखते ही उसे कड़वी सच्चाइयों का सामना करना पड़ा।
उसे समझ आया कि यह दुनिया उतनी सरल नहीं, जितनी कॉलेज की प्रतियोगिताएँ थीं।
यहाँ—

- अनेकों प्रकार के लाइसेंस,
- सरकारी स्वीकृतियाँ,
- दफ्तरों के चक्कर,
- व्यापारिक लोगों की चालाकियाँ,
- और सिस्टम की जटिलताएँ

उसका रास्ता रोकने के लिए खड़ी थीं।

वह इन सब उलझनों से बाहर ही नहीं निकल पाया।
नतीजतन, उसके सपने—देश सेवा के, लोगों को रोजगार देने के, समाज में बदलाव लाने के—धीरे-धीरे धुँधले पड़ने लगे।
उसके वर्षों के पढ़ाई के अनुभव, अवॉर्ड, प्रमाण पत्र—सब किसी बंद अलमारी के कोने में सिमटते चले गए।
यह कहना गलत होगा कि जो व्यक्ति पढ़ाई के समय में सफल रहा, वह जीवन में असफल हो जाता है।
सच्चाई यह है कि जीवन में सफलता और विफलता के पीछे कई जटिल कारण होते हैं, जो अक्सर हमारी नियंत्रण-सीमा से बाहर होते हैं।

आज मैं अपने सामने उसी समीर जैन को खड़ा देख रहा था—
परिवार के साथ, मुस्कुराता हुआ, सहज और विनम्र...
लेकिन उसकी आँखों में एक हल्का धुंधलापन था, जो साफ बता रहा था कि वह बहुत कुछ झेल चुका है।
उसने बहुत थकान सही है... लेकिन वह अभी भी पूरी तरह से हारा नहीं है।
उसके भीतर अब भी कहीं न कहीं वह पुराना 'असाधारण समीर' जीवित था—जो फिर उठने की हिम्मत रखता है।

"बोली अनमोल है"

हर्ष कुमार ओझा
वरिष्ठ प्रबंधक,अंचल कार्यालय

सामाजिक व्यवहार के परिवेश में बोली का बड़ा महत्व है।

"सुनु मृदु गूढ़ रुचिर बर रचना। कृपासिंधु बोले मृदु बचना।।"

भगवान राम के जीवन से यह सिद्ध होता है कि कठिन से कठिन परिस्थितियाँ मृदु भाषा से संभाली जा सकती है। हम दैनिक जीवन में अनेक बार श्री राम जी के जीवन से प्रेरणा लेकर उन परिस्थितियों में भी कोई रास्ता निकाल लेते हैं जहां अत्यं गंभीर माहौल होता है। चाहे परशुराम जी का प्रसंग हो,सुग्रीव का वचन भूलने का प्रसंग हो या सागर संवाद का प्रसंग हो। सब जगह श्री राम मृदुलता और विवेक का परिचय देते हुए परिस्थिति संभालने की प्रेरणा देते हैं।

हम अपने दैनिक कार्य में अनेक बार विपरीत परिस्थितियों का सामना करते हैं। शाखा में कभी रुष्ट ग्राहक को समस्या हो और वहां विवेकपूर्ण मृदुलता की बोली से काम न लें तो अक्सर समस्या जटिल हो जाती है।

कई बार देखा गया है कि जटिल ग्राहक शिकायतों की जड़-अविवेकपूर्ण बोली होती है। इसीलिए वचन से मृदु और बुद्धिमता में विवेकशीलता सदैव हमारे जीवन में रहनी चाहिए।

कहानी

"रिस्तों की मजबूती"

दिनेश कुमार यादव
वरिष्ठ प्रबंधक अंचल कार्यालय,वाराणसी

मैं जौनपुर ज़िले के एक छोटे से गाँव का रहने वाला हूँ। हमारे गाँव में एक अत्यंत सम्मानित परिवार था—छह भाई, उनके बच्चे, और पूरा परिवार प्रेम, हँसी और एकजुटता के साथ एक ही घर में रहता था। छह भाइयों के कुल नौ बेटे और सात बेटियाँ थीं। इनमें से चार बेटियों की शादियाँ अच्छे घरों में हो चुकी थीं और वे अपने-अपने परिवार में सुखी थीं। शेष तीन बेटियों की शादी अभी बाकी थी। लड़कों में दो बड़े भाइयों की शादी हो चुकी थी, परंतु बाकी भाई अभी पढ़ाई कर रहे थे।

शादी के बाद दो बड़े भाई, जिनका मन पढ़ाई में नहीं लगता था, छोटे-मोटे निजी काम के लिए बाहर चले गए, जबकि सात भाई अब भी शिक्षा में जुटे रहे। पिता जी लोगों में से एक को छोड़कर (जो प्रधान थे और खेती भी संभालते थे) सभी सरकारी नौकरी या निजी व्यवसाय में थे। घर लगातार तरक्की कर रहा था। बहुएँ आने के बाद दो भाइयों में मतभेद दिखने लगे, परंतु अन्य सभी भाई इन बातों को नज़रअंदाज़ कर घर की उन्नति पर ध्यान देते रहे।

उसी समय घर में रहने वाले भाई की बेटी के विवाह की बात चल रही थी कि दोनों भाइयों ने अलग होने का निर्णय ले लिया। यह देखकर अन्य भाइयों ने भी अलग होने का निश्चय कर लिया और वर्ष 2002 में परिवार अलग-अलग हो गया। परंतु प्रधान जी और एक भाई, जो सहायक विकासखंड अधिकारी थे, साथ रहने और आगे बढ़ने का निर्णय लिए रहे। सहायक विकासखंड अधिकारी साहब ने प्रधान जी की बेटी का विवाह एक सुसंस्कृत और सुयोग्य परिवार में कराया, जहाँ बेटी आज भी बहुत खुश है।

दोनों भाइयों के बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त कर वन डे व सिविल सेवा की तैयारी कर रहे थे, परंतु सफलता नहीं मिल रही थी। इसी बीच प्रधान जी की बड़ी बेटी का चयन शिक्षक के रूप में हो गया, जिससे घर में अपार खुशी आई और शिक्षा के प्रति उत्साह और बढ़ गया। कुछ ही समय बाद दोनों भाई सिविल सेवा के साक्षात्कार तक पहुँचने लगे, लेकिन अंतिम चयन नहीं हो रहा था। फिर भी वे निराश न होकर तैयारी में लगे रहे।

वर्ष 2007 में छोटे भाई (प्रधान जी के पुत्र) का चयन बैंक अधिकारी के रूप में हो गया, जिससे घर में उत्सव का माहौल बन गया और बड़े भाई का हौसला भी बढ़ा। समय के साथ बड़े भाई ने भारतीय प्रशासनिक सेवा के के लिए साक्षात्कार दिया, जिससे घर में नई उम्मीद जगी,परंतु दुर्भाग्यवश चयन नहीं हो पाया।

“रिस्तों की मजबूती ”

यह उनका अंतिम प्रयास था, जिससे दुखी होकर वे घर लौट आए। घर वालों ने उन्हें समझाया और पुनः प्रयास के लिए प्रेरित किया। अंततः उनका चयन उत्तर प्रदेश राजस्व विभाग में हो गया। पूरे परिवार में खुशी की लहर दौड़ गई।

इसके बाद घर में सब कुछ सामान्य होने लगा। दो छोटे भाइयों, जिनकी पढ़ाई में रुचि नहीं थी, उन्हें परिवार ने अलग-अलग व्यवसाय में लगा दिया। सभी आत्मनिर्भर हो गए, छोटे भाइयों की शादियाँ भी कर दी गईं और परिवार एक बार फिर एकजुट होकर खुशहाल जीवन जीने लगा।

सभी ने मिलकर गाँव में एक सुंदर मकान बनवाया, खेती की जमीनें ख़रीदीं, शहर में भी आवासीय भूमि ली, और खोया हुआ सम्मान वापस पा लिया। सब कुछ बढ़िया चल रहा था, लेकिन जून 2024 में अचानक पिता जी लोगों में किसी कार्य को लेकर मनमुटाव हो गया। इसका प्रभाव बच्चों पर भी दिखने लगा और पारिवारिक सामंजस्य टूटने लगा। भाइयों ने कई बार बैठकर फिर से एक साथ रहने की कोशिश की, परंतु उनकी पत्नियों ने संयुक्त परिवार में रहने से इंकार कर दिया।

जब कारण पूछा गया तो पता चला कि अब सभी को छोटे परिवार में अधिक सुविधा महसूस होती थी। यद्यपि किसी को कोई आर्थिक या घरेलू कष्ट नहीं था, फिर भी मन में यह भ्रम बैठ गया था कि उनके पति ही अधिक खर्च उठा रहे हैं। धीरे-धीरे स्थिति 2004 जैसी हो गई और परिवार दोबारा बिखर गया। सभी अलग हो गए, संवाद रुक गया, और बाहर रहने वाले भाइयों ने गाँव आना तक लगभग बंद कर दिया।
इस पूरी घटना से दो बातें स्पष्ट हुईं—

पहली, समय के साथ सब कुछ बदल जाता है, चाहे रिश्ते कितने भी मजबूत क्यों न हों। कुछ लोग छोटी-छोटी लालसाओं और स्वार्थ के कारण ऐसा वातावरण बना देते हैं कि साथ पले-बढ़े भाई भी एक-दूसरे से दूर हो जाते हैं।

दूसरी, “अपनापन” और “पुत्र-मोह” यदि सीमाओं के बाहर चला जाए तो वह परिवार को जोड़ने के बजाय तोड़ देता है।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह समझ आई कि बच्चों को अच्छी संपत्ति देने से अधिक जरूरी है उन्हें अच्छे संस्कार और शिक्षा देना। यही उन्हें जीवन में आगे बढ़ने की असली ताकत देते हैं। संपत्ति बनाने के चक्कर में अपने ही लोगों से दूर हो जाना किसी भी स्थिति में उचित नहीं है।

क्योंकि एक दिन हम सभी को इस दुनिया से खाली हाथ ही जाना है।
इसलिए मिल-जुलकर रहें, खुश रहें, और एक अच्छा इंसान बनकर जीवन में एक अच्छी पहचान और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण बनाएं।

कहानी

"संघर्ष से सफलता तक: रवि की कहानी"

राहुल कुमार सिंह
वरिष्ठ प्रबंधक,अंचल कार्यालय वाराणसी

गाँव का एक लड़का था – रवि।
उसका जन्म एक बेहद गरीब परिवार में हुआ। पिता खेतों में मजदूरी करते थे और माँ गृहिणी थीं। घर की हालत इतनी खराब थी कि कई बार पेट भरने के लिए रोटी तक नसीब नहीं होती थी।

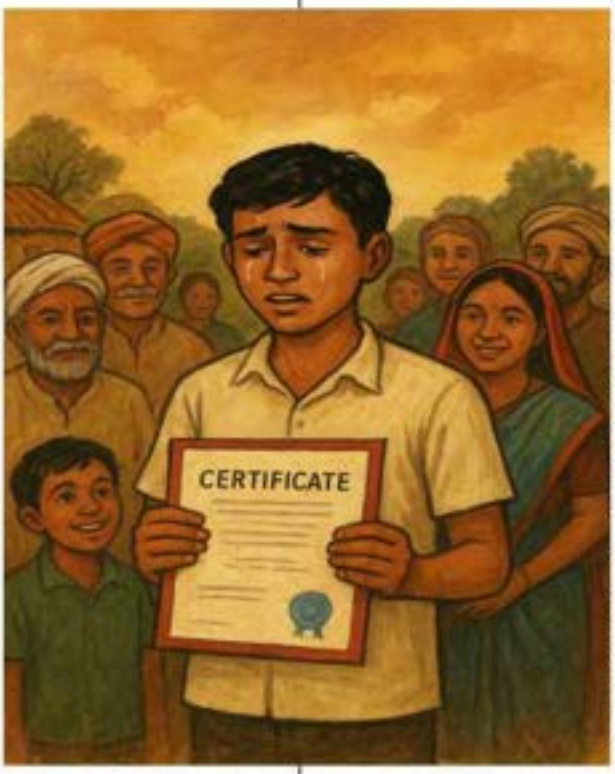

रवि के पास किताबें खरीदने तक के पैसे नहीं थे, लेकिन उसकी लगन इतनी प्रबल थी कि वह पुरानी अख़बारों पर लिखकर पढ़ाई करता। दिनभर खेतों में बैल जोतने, घर के काम करने और कभी-कभी मज़दूरी करने के बावजूद उसने पढ़ाई को कभी नहीं छोड़ा।

गाँव के लोग अक्सर ताना मारते – "अरे! पढ़-लिखकर क्या करेगा? आखिर में खेती ही करनी है, मजदूरी ही करनी है।" लेकिन रवि का विश्वास अडिग था। उसे यकीन था कि शिक्षा ही उसकी ज़िंदगी बदल सकती है।

कई बार उसने भूखे पेट पढ़ाई की, कई बार अंधेरे में दीये की लौ के सहारे रातभर जागकर किताबों से जूझा। संघर्ष उसके हर कदम पर था, लेकिन उसका हौसला उससे भी बड़ा था। धीरे-धीरे उसकी मेहनत रंग लाई। रवि ने अपनी लगन और परिश्रम से पढ़ाई में सफलता पाई। परीक्षा में उसने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया और उसके लिए उसे विशेष सम्मान मिला।

सम्मान समारोह के दिन जब रवि ने प्रमाणपत्र हाथ में लिया तो उसकी आँखों में आँसू थे। वह भावुक होकर बोला – "यह संघर्ष केवल मेरा नहीं है। यह सम्मान केवल मेरा नहीं है। यह हर उस कठिनाई का है जिसने मुझे आगे बढ़ना सिखाया। और सबसे बड़ा यह मेरे माता-पिता का है, जिन्होंने अपनी तकलीफ़ें सहकर भी मुझे सपनों की राह पर चलने दिया।"

उसकी बात सुनकर पूरा गाँव स्तब्ध रह गया। वही लोग, जो कभी उसे ताने मारते थे, आज गर्व से उसकी ओर देख रहे थे। रवि की कहानी अब केवल उसकी नहीं रही, बल्कि हर उस बच्चे की प्रेरणा बन गई जो कठिनाइयों के बीच भी सपनों को सच करने का साहस रखता है।

कहानी

"संगत का प्रभाव"

रचना कुमारी चौधरी
वरिष्ठ प्रबन्धक,एसएमई एवं एग्री हब वाराणसी

एक स्कूल मे रमेश और सुरेश नाम के दो मित्र पढ़ते थे। रमेश और सुरेश दोनों ही पढ़ने मे बहुत तेज थे परंतु रमेश अपने सभी कार्य अनुसाशन के साथ करता था और सुरेश लापरवाह था और दूसरों की बातों मे आ जाता था।

एक बार की बात है, स्कूल मे मोंटी नाम के एक लड़के ने ऐडमिसन लिया। वो बहुत ही बदमाश लड़का था और पढ़ने मे भी उसका मन नहीं लगता था। स्कूल मे जब उसने रमेश और सुरेश की दोस्ती को देखा तो उसे दोनों से ही ईर्ष्या होने लगी। उसने दोनों की दोस्ती मे फुट डालने का मन बना लिया। पहले उसने रमेश को फुसलाने की कोशिश की और सुरेश की बुराई कर अपनी तरफ मोड़ना चाहा। परंतु, रमेश उसकी चालांकी समझ गया और उसने उससे दूरी बना ली। तब मोंटी ने सुरेश के साथ नज़दीकियाँ बढ़ानी शुरू की। उसने रमेश की झूठी झूठी शिकायत की और ये भी गलतफहमी बनाई की रमेश उसका फायदा उठाकर अपना नाम कमा लेगा और तुमसे पीछा छुड़ा लेगा।
धीरे धीरे सुरेश मोंटी के जाल मे फँसता चला गया और उसने मोंटी से दोस्ती कर ली। यह सब देखकर रमेश ने सुरेश को समझाना चाहा पर सुरेश ने मोंटी को भी अपना दोस्त बनाने की सलाह दे दी,जिसे रमेश ने नकार दिया, जिस पर सुरेश को गुस्सा आ गया और उसने रमेश से बात करना छोड़ दिया। स्कूल मे वार्षिक परीक्षा आने पर, मोंटी ने प्रिंसिपल के रूम से परीक्षा के पेपर चुरा लिए। जिसका पता लगते ही प्रिंसिपल ने जब खोजना शुरू किया तो मोंटी ने डर के मारे परीक्षा के मारे परीक्षा के पेपर सुरेश के बैग मे डाल दिये। प्रिंसिपल ने जैसे ही सुरेश का बैग देखा तो पेपर मिल गया और उन्होने पुलिस बुलाकर सुरेश को अरेस्ट करवा दिया।

इन सब की जानकारी जैसे ही रमेश को लगी वह तुरंत ही प्रिंसिपल के पास गया और उसने उन्हे समझाया की उसका मित्र इतनी बड़ी गलती नहीं कर सकता कृपया आप पुनः जांच करें। चूंकि रमेश स्कूल का होनहार लड़का था, इसलिए प्रिंसिपल ने अपने रूम का जब सीसीटीवी देखा तो उसमे मोंटी पेपर चुराता हुआ पाया गया। तब शीघ्र ही प्रिंसिपल मोंटी और रमेश को लेकर पोलिस स्टेशन गए और सारी बातें बता दीं। पोलिस ने तुरंत ही सुरेश को छोड़ दिया और मोंटी को पकड़ लिया। सुरेश ने बाहर आकर जैसे ही रमेश को देखा तो शर्म के मारे वो उससे अपनी नजरें ना मिला सका और अपनी गलती का अहसाह कर रोने लगा। तब रमेश ने उसे गले लगा लिया और कहा की तुम मेरे प्रिय मित्र हो और मै तुम्हारा साथ कभी नहीं छोड़ूंगा। तब प्रिंसिपल ने भी कहा की यदि आज रमेश ना होता तो शायद सुरेश को सभी गलत मानते और भविष्य भी खराब हो जाता, इसलिए सच्चे मित्र का साथ कभी नहीं छोडना चाहिए और हमेशा अच्छे लोगों के संगत मे ही रहना चाहिए। सुरेश अब समझ गया था की रमेश ही उसका सच्चा मित्र है जिसने बुरे वक्त मे उसका साथ नहीं छोड़ा। उस दिन के बाद से दोनों की दोस्ती और भी गहरी हो गयी।

कहानी

"भावनाओं की डोर"

शिप्रा प्रसाद

वरिष्ठ प्रबंधक, शाखा-रामनगर

तुम पास ही हो मेरे, तुम पास ही हो मेरे... अपने अंतरमन की आवाज़ से सिया का रोम-रोम सिहर उठता, उसकी आँखें झिलमिला जातीं, मन घोड़े पर सवार दौड़ने लगता और हृदय की गति दोगुनी हो जाती।

सिया सरकारी संस्था में अधिकारी के पद पर नियुक्त है। दफ्तर में वह सहज, सरल और कठोर दिखने वाली महिला है, लेकिन असल में हर दिन अपनी भावनाओं के द्वंद्व को शांत करने और जीवन में आगे बढ़ने के लिए संघर्ष कर रही है।

सिया अपने परिवार के साथ वाराणसी में रहती थी। चार साल पहले सिया और उसके जीवनसाथी मानव के घर एक बार फिर किलकारी गूंजी थी। उनका परिवार पूरा हो गया था। तीन साल की वाणी को छोटी बहन मिल गई थी, जिसका नाम प्यार से प्रव्या रखा था। नन्हीं सी प्रव्या के आने से वाणी बेहद खुश थी। अस्पताल में पहली बार वाणी ने अपनी छोटी बहन को देखा तो माँ से बोली – "मम्मा, इसका तो सारा फिंगर ही बेबी फिंगर है।" और उसे फिंगर नेम वाली कविता सुनाने लगी। दोनोंबच्चियों को साथ देखकर सिया का मन खिल उठता और वह भविष्य के सुनहरे सपने बुनने लगती।

प्रव्या के घर आने से घर का कोना-कोना जगमगाने लगा, मानों घर सजीव हो उठा। बच्चे हँसते, खेलते, चिड़ियों की तरह चहचहाते। सिया, मानव से कहती – बच्चों के आने से अब हमारा घर चिड़ियों का घोंसला लगता है। वह बच्चों को निहारती, पुचकारती और सोचती, "दोनों बच्चियाँ साथ बड़ी होंगी, जीवन के हर अच्छे-बुरे वक्त में एक दूसरे का साथ देंगी।"

खुशियों से भरा एक साल ऐसे ही बीता, समय को पंख लग गए थे। पर खुशियाँ ज्यादा दिन टिकती कहाँ हैं। ईश्वर को कुछ और मंजूर था प्रव्या में उसी के उम्र के बच्चों जैसा शारीरिक विकास नहीं हो रहा था। उसने समय से बैठना और चलना शुरू नहीं किया। जब पता चला कि प्रव्या को विकास में देरी की समस्या है, सिया के आँखों के सामने अंधेरा छा गया।

सिया और मानव मान ही नहीं पा रहे थे कि प्रव्या को ऐसा कुछ हो सकता है। अस्पताल के चक्कर, दवाइयाँ और थेरैपी शुरू हो गई। सिया हर दिन ईश्वर से प्रार्थना करती, "मेरे बच्चों को अच्छे स्वास्थ्य और लंबी आयु दीजिए, प्रव्या जल्दी चलने लगे" सिया ने एक साल का सैबेटिकल

लीव लिया, जो बच्चे के इलाज के लिए तुरंत मिल गया। बेहतर चिकित्सा के लिए, सिया और मानव, वाणी और प्रव्या को लेकर दिल्ली चले गए।

दिल्ली में प्रसिद्ध बाल चिकित्सक डॉ. वीणा कालरा से प्रव्या का इलाज शुरू हुआ। महीनों दवाइयाँ और थेरैपी चलीं। प्रव्या में थोड़ा सुधार आया—वह सहारा लेकर चलने लगी थी, ऐसा लगता की बस अब वो चलना सीख जाएगी, उसने माँ बोलना भी सीख लिया था, शायद कुछ दस तक की गिनती अपनी दीदी से दोहराने लगी थी। वाणी स्कूल से आते ही प्रव्या को गोद में उठाती और तोतली आवाज़ में पूछती, "प्रव्या तुम कब चलोगी? तुमसे छोटे बच्चे चलने लगे हैं।"

सिया का दिल पिघल जाता जब वाणी भगवान की मूर्ति के सामने हाथ जोड़कर बोलती – "हे भगवान, मेरी प्रव्या को जल्दी चला दो। वो चल नहीं पाती, मैं उसके साथ पार्क में खेलना चाहती हूँ, प्रव्या से छोटे बच्चे चलने लगे है वो क्यों नहीं चल रही , पिछले महीने मां ने प्रॉमिस किया था कि अपने बर्थडे पर प्रव्या चलने अब तो बर्थडे आकर चला भी गया।"

कमजोर इम्यूनिटी की वजह से प्रव्या बार-बार बीमार पड़ती। दो वर्ष की उम्र के बाद उसका स्वास्थ्य ज्यादातर खराब रहता। खाने में दिक्कत, निगलने में परेशानी होने लगी , मल्टीविटामिन व टॉनिक बढ़ाए गए। जब दोनों बच्चियाँ साथ खेलते तो प्रव्या खुश रहती, दीदी के साथ चलने-बोलने की कोशिश करती; पर जब वाणी स्कूल या पार्क चली जाती तो अकेले में परेशान हो जाती, अपनी तकलीफ माँ को बता भी तो नहीं पाती थी। एक साल और बीत गया। डॉक्टर ने कहा कि प्रव्या की बीमारी का इलाज नहीं है, वक्त के साथ ही सुधार संभव है। दिल्ली में एक साल बाद भी प्रव्या चलना नहीं सीख सकी। अब सिया-मानव वाराणसी लौट आए। सिया को वेल्लोर के एक प्रसिद्ध अस्पताल का पता चला जहाँ स्पेशल बच्चों का इलाज किया जाता है, वेल्लोर में प्रव्या के सभी टेस्ट हुए—जेनेटिक टेस्ट भी—पर कोई बीमारी की पुष्टि नहीं हुई।

अक्सर सिया की आँखें छलक जातीं, सोचती क्या प्रव्या कभी चल पाएगी या कभी 'माँ' कहकर बुलाएगी। सिया ने बच्ची के इलाज में खुद को झोंक दिया, उसके खान-पान और थेरेपी का पूरा ध्यान रखती थी । प्रव्या बहुत प्यारी बच्ची थी—जब हँसती, लगता फूल खिल उठे हैं, चाँद कुछ ज्यादा चमक रहा हो, उसकी एक हँसी से सिया की सारी थकान दूर हो जाती। प्रव्या सभी को हाथ जोड़कर प्रणाम करती, उसकी मुस्कान सभी के मन को छू जाती।

भगवान ने उसके मन में कूट कूट कर प्रेम भरा था। बोल नहीं पाती थी, लेकिन चूमकर या हँसकर स्नेह जताती थी। प्रव्या को माँ के आंसू और पापा के हृदय का कस्ट महसूस होता था, माँ को रोता देख कर, दोनों हाथों से गर्दन पकड़ कर माँ का मुख चूम लेती और हाथों से आंसू पोंछती । प्रव्या ने बहुत संघर्ष किया थेरैपी के दौरान थक कर भी हिम्मत नहीं हारती थी , चलने का बार-बार प्रयास करती रही।

लेकिन असंभव चीज़ संभव कैसे होती। बीमारी व दवाइयाँ बढ़ती गईं। माँ का हृदय बेबसी से भरा, तिल तिल का नन्ही सी जान को बिमारी में डूबता देखता रहा।

पिछले साल प्रव्या को निमोनिया हो गया, उसके फेफड़ों तक संक्रमण फैल गया और सांस लेने में समस्या आ गई। वाराणसी के डॉक्टरों ने जवाब दे दिया, सिया और मानव

"भावनाओं की डोर"

दिल्ली के अपोलो अस्पताल भागे। प्रव्या की हालत बिगड़ती गई, अब उसे सांस लेने के लिए वेंटिलेटर सपोर्ट की जरूरत थी। डॉक्टरों ने कहा निमोनिया नहीं, उसकी मूल बीमारी बढ़ गई है, जिसका कारण पता नहीं चल पा रहा और ऐसे स्पेशल बच्चे किसी न किसी कारण से बीमार पड़ते है और फिर बच नहीं पाते। तीन महीने वेंटिलेटर पर रहने के बाद, सिया के आखों के सामने उसकी नन्हीं बेटी प्रव्या ने दम तोड़ दिया।

सिया और मानव के सपनों का सुखद जीवन टूट गया। प्रव्या अब घर नहीं लौटी, वाणी को समझाना कठिन था। वाणी के आँखों में सैकड़ो सवाल थे, सिया अपनी बेटी से बस इतना कि कह पाई —"प्रव्या ज्यादा बीमार हो गयी थी, ठीक नहीं हो पाई, इसलिए भगवान के पास चली गई है। "वाणी बहुत रोई—"माँ, प्रव्या की बहुत याद आती है, अब मैं सिंगल चाइल्ड हो गई।"

सिया वाणी को हमेशा यही समझाती—"प्रव्या तारों में चली गई है, अब वो चल सकती है, बोल सकती है,सारे बंधनों से आज़ाद है, बहुत खुश है। उसे हम देख नहीं सकते पर वो भावनाओं की डोर से जुडी है और हमारे पास ही है।"

प्रव्या के जाने के बाद, सिया को लगता कुछ खो गया है जो कमरे में नजरें घुमाने से मिल जाएगा। उसकी आँखें हर जगह प्रव्या के होने का एहसास दिलातीं, कानों में उसकी कूक सी सुनाई देती। प्रव्या को खोए छह महीने से ज्यादा बीत गए हैं, आज 13 अक्तूबर है, प्रव्या का जन्मदिन। आज ही के दिन सिया के जीवन में खुशियाँ आई थीं, उसका परिवार पूरा हुआ था। बार बार सिया की आँखें भर जा रही है, उसे समझ नहीं आ रहा वो क्या करे।

मानव ने मुश्किलों से परिवार को सम्भाला है और सिया को आगे बढ़ने को प्रेरित करते है। अब सिया दिनभर दफ्तर और शाम को वाणी संग दिल बहलाती है, पर प्रव्या उसकी हर धड़कन से जुड़ी है। कई बार हृदय में उठता वेग, हृदयघात सा जान पड़ता है, कई बार भावनाओं का ज्वारभाटा मन को विचार शून्य कर जाता है। माँ का हृदय अपने बच्चे के लिए कलप उठता है और एक सवाल कि, -- "क्यों , आखिर क्यों? तुमको खो दिया, मन को झकझोर देता है। "

सिया जानती है, पीछे मुड़ने से कोई वापस नहीं आएगा। बेटी का पार्थिव शरीर गंगा में विलीन हो चुका है, अब भावनाओं की डोर से प्रव्या उसके हृदय में हमेशा बसी रहेगी।नदी की तरह जीवन आगे ही चलता है—जो छूट जाते हैं, लौटकर नहीं आते।

आज प्रव्या के जन्मदिन पर सिया को हरिवंशराय बच्चन जी की कविता याद आ रही है—

"जो बीत गई सो बात गई

जीवन में एक सितारा था,माना वह बेहद प्यारा था

वह डूब गया तो डूब गया,अम्बर के आनन को देखो

कितने इसके तारे टूटे,कितने इसके प्यारे छूटे

जो छूट गए फिर कहाँ मिले,पर बोलो टूटे तारों पर

कब अम्बर शोक मनाता है,

जो बीत गई सो बात गई। "

वाणी बड़ी हो रही है, जीवन के दायित्व बढ़ रहे हैं, अब सिया को भी आगे बढ़ना है क्योंकि जीवन हमेशा आगे बढ़ता है। सिया जब तक जीवित रहेगी,उसके हृदय में नन्ही प्रव्या भावनाओं की डोर से जुड़ी रहेगी।

कविताएं

अजीता गुप्ता

विधि अधिकारी,अंचल कार्यालय वाराणसी

चलो, अब उड़ चलें

चलों अब इम्तिहान की घड़ी हम ख़त्म करते हैं
चलों यहाँ से कुछ आगे चलते हैं

माना डर लगता है आगे क़दम बढ़ाने में
माना दिल ठहर जाता है, कल क्या होगा सोच जाने में

पर कब तक
आख़िर कब तक
तुम यूँ ही बैठे रहोगे

कब तक
आख़िर कब तक
तुम यूँ ही रोते रहोगे

हक़ तो तुम्हें भी है न जीने का
तो जीते क्यों नहीं
दिल तो तुम्हारा भी करता है उड़ जाने का
तो उड़ते क्यों नहीं
एक क़दम तो बढ़ाओ
दूसरा ख़ुद बढ़ेगा
तुम हिम्मत तो करो उठने की
जीवन तुम्हारा भी बदलेगा

आर्यन राज

सहायक प्रबंधक,चंदौली शाखा

वक्त

दिनभर काम के बोझ तले दब जाता हूँ,
अपने ही ख्वाबों से दूर निकल जाता हूँ।

घड़ी की सुइयाँ बस भागती रहती हैं,
और मैं ज़िन्दगी से बातें अधूरी ही कह पाता हूं।

कभी सोचा था खुद के लिए भी जी लूँगा,
पर वक़्त के हाथों हर पल हार मान जाता हूं।

शायद ज़िन्दगी यही सिखाना चाहती है,
कि अपना वक़्त भी सबसे ज़रूरी है, यही बताती है।

बाल कलाकार

रुद्रांश सिंह

सुपुत्र-श्री रितेश कुमार,अंचल कार्यालय

वरिष्ठ प्रबंधक,अंचल कार्यालय

शानवी समृद्धि,

सुपुत्री-श्री दिलीप कुमार

मुख्य प्रबंधक

अंचल कार्यालय

बाल कलाकार

माहिम अवस्थी

सुपुत्र-श्रीमती नेहा मिश्रा

प्रबंधक,अंचल कार्यालय

शैव्य अवस्थी ,

सुपुत्र-श्रीमती नेहा मिश्रा

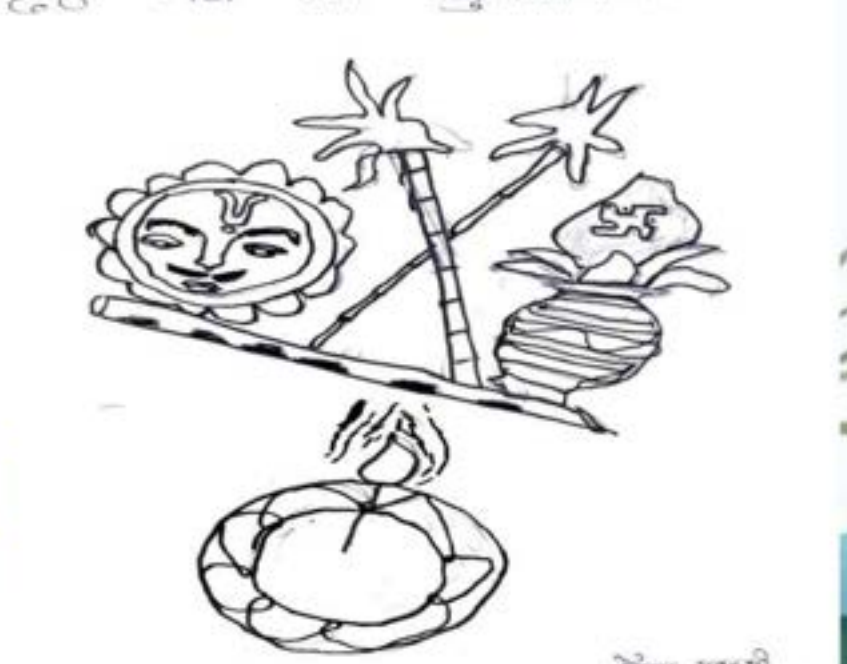

प्रबंधक,अंचल कार्यालय

गतिविधियाँ

नराकास की छमाही बैठक

"नराकास वाराणसी की छमाही बैठक में गृह मंत्रालय के उपनिदेशक श्री छबिल कुमार मेहेरे की गरिमामयी उपस्थिति में यूको बैंक की ओर से राजभाषा अधिकारी एवं कार्यालय प्रमुख ने उपस्थिति दर्ज की। बैठक के दौरान यूको बैंक के अंचल प्रमुख श्री मयंक सिंह द्वारा नराकास अध्यक्ष का स्वागत किया गया। साथ ही, प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए श्रीमती रचना कुमारी चौहान तथा श्री सत्यानंद महेश्वरी को पुरस्कार प्रदान किए गए।"

गतिविधियाँ

स्वच्छता पखवाड़ा : वृक्षारोपण एवं स्वच्छता अभियान का आयोजन

यूको बैंक द्वारा स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति सार्थक पहल: यूको बैंक द्वारा स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत स्वच्छता एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने हेतु विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान एवं पैदल मार्च का आयोजन किया गया, जिसमें अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।
कार्यक्रम का शुभारम्भ अंचल प्रमुख महोदय द्वारा पौधारोपण कर किया गया। इस दौरान सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने परिसर तथा आस-पास के क्षेत्रों में स्वच्छता बनाए रखने का संकल्प लिया।

वृक्षारोपण के दौरान विभिन्न प्रकार के छायादार एवं औषधीय पौधे लगाए गए, जिनमें नीम, पीपल, अशोक, तुलसी,आम आदि प्रमुख थे। इसके पश्चात आयोजित पैदल मार्च में कर्मचारियों ने "स्वच्छ क्षेत्र – स्वस्थ समाज", "हरित पर्यावरण – सुरक्षित जीवन" जैसे नारों के माध्यम से जन-जागरूकता फैलाने का संदेश दिया।

स्वच्छता अभियान के अंतर्गत शाखा परिसर, पार्किंग स्थल एवं आसपास के क्षेत्रों में साफ-सफाई की गई। कर्मचारियों ने स्वच्छता के महत्व पर बल देते हुए यह संकल्प लिया कि वे कार्यस्थल के साथ-साथ अपने घर और समाज में भी स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाएंगे।

अंचल प्रमुख महोदय श्री मयंक सिंह ने अपने संबोधन में कहा—
"स्वच्छता केवल एक अभियान नहीं, बल्कि यह हमारे जीवन का संस्कार बनना चाहिए। यूको बैंक सदैव समाजहित में ऐसे जन-जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन करता रहेगा।"यूको बैंक का यह अभियान न केवल पर्यावरण संरक्षण की दिशा में एक प्रेरणादायी कदम रहा, बल्कि इसने सामाजिक उत्तरदायित्व के प्रति बैंक की प्रतिबद्धता को भी प्रदर्शित किया।

गतिविधियाँ

हिन्दी पखवाड़ा-2025

यूको बैंक द्वारा हिन्दी पखवाड़ा बड़े उत्साह एवं उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न शाखाओं एवं विभागों के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सक्रिय रूप से प्रतिभागिता दर्ज कर राजभाषा हिन्दी के प्रति अपनी अभिरुचि एवं निष्ठा का परिचय दिया।

पखवाड़े के दौरान कहानी लेखन, कविता लेखन,चित्र देखो कहानी लिखो,कौन है कथनकार,ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी,मूक सारथी प्रतियोगिता आदि कई रोचक एवं ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए यह सिद्ध किया कि हिन्दी न केवल हमारी राजभाषा है, बल्कि हमारे विचारों की सहज और प्रभावी अभिव्यक्ति का माध्यम भी है।

कार्यक्रम का समापन पुरस्कार वितरण एवं सम्मान समारोह के साथ हुआ, जिसमें उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को अंचल प्रमुख द्वारा प्रमाणपत्र एवं पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

राजभाषा अधिकारी ने प्रतिभागियों की सक्रिय भागीदारी हेतु आभार व्यक्त करते हुए यह आशा व्यक्त की कि इस प्रकार के आयोजन कर्मचारियों में हिन्दी के प्रयोग को और अधिक प्रोत्साहित करेंगे।

INDEPENDENCE DAY

नराकास राजभाषा सम्मान 2024- 25
द्वितीय पुरस्कार
कोलकाता (बैंक)